Shri Hari

Core Mota Mandir - Sewa Kram
www.vallabhacharya-agrahara.org
www.vallabhacharyakrupa.org
(Pushtimargiya Research Portal)

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

Core Mota Mandir : Pracheen Sewa Kram
(Old Photo Copy)

Following is the incalculable wealth
I have received from my
Respected Parents and Respected Mukhiyaji.

Goswami Gokulnath

याको दीजे फेरिपरिक्रमाकरिटेरादे ठाकुरकीगादी
परपधराईये सोनित्यहिंडोरानूलनहोइ उहांविराज
केहिंडोराऊजेकीर्त्तन होइ २ छोटेहोई फेरअंगरव
ड़ोकरिसेनभोगआवे भोगसराइ आरतीकरिपोढा
ईये ॥ श्रावन सुदी ११ पवित्राउत्सव अभ्यंगहोत
पिछोड़ाकेसरकीकोरको कुलहीस्वेतकेसरीकोरतुरी
नमे श्रीस्वामिनीजीकी साड़ीस्वेतकोरकी किनारीके
भीतर दोऊवस्त्र एकश्रमल श्रीबालकृष्णजीको ओढनी
श्वेतकेसरीकोरकी कुलही स्वेत --- गोटी न---
----पुरातनमोरावकके पादुकाजीको ओढनी
स्वेत केसरीकोररंगकी आभरणमोरावकके चंद्रका
३ कोजोड़ सवेरे भद्रा न होइ तो गोपीवल्लभभोगसरे
तबकड़ी इकरा आरोगे पाछेपवित्राधरे भद्रास
बारेहोइ तो भोगकेदर्सन होइ साज उठे झारीभरिके
पवित्राधरे पेहेले पवित्राको न-रसबीको अधिवा
सनरखकठोरीमे रखिके मनधारमें पवित्रासूतको
तार ३६० को तापर पीरोपाटलनपेटीमे फूलमाला
न-सुनेरीपवित्रा न-रेसमी पवित्रा सबसमारिके
पारमेरारवीये फेरआचमन प्रानायाम करि हाथ
मे अक्षतजललेई विष्णु विष्णु विष्णु आद्येत्यादि

न· देशकालौ संकीर्त्य भगवनः श्रीपुरुषोत्तमस्य पवित्राधार
७६ णार्थं रक्षाबंधनार्थं पवित्रा रक्षयोर अधिवासनं करिष्ये
इति संकल्प अक्षत जल भूमि पे डारि देनो सवेरे पवित्रा धरे
नव गोपीवल्लभ भोग धरिके करनो सांझको धरे नव उत्था
पन भोग धरिके करनो फेर अधिवासन करिके पवित्रा
पर चंदन छिरकिये धूप दीप करिके गद्दी की कटोरी
धरिये नामे तुलसी समर्पि संखोदिक कीजे पाछे आच
मन कराय आरती मोती की बाती २ प्रगट करिके करीये
फेर सवेरे पवित्रा धरे अंगार भरे पाछे नवतो पवित्रा उ
त्सव को भोग गोपीवल्लभ के संग आरोगे नव धूप दीप
करनो तुलसी संखोदिक करनों औरउवरा आरोगिके
पवित्रा धरे नवतो राजभोग के साथ ही उत्सव को भोग
आरोगे सो धूप दीप राजभोग की इतनी है और भोग
के समय पवित्रा धरे नव संध्या भोग के साथ पवित्रा को
भोग आवे नव धूप दीप करीये तुलसी संखोदिक करी
ये पवित्रा प्रभु पे [illegible] खानो नही और प
वित्रा सवेरे धरे नव सेवको आघो पाटीया न· धोईदार
न· तीन कूंडा मीठो शाक न· पापड़ वड़ी इतनो अधिको
और सांझको पवित्रा धार राखे नव सखड़ी को भोग दू
दसी को आरोगे क्यो जो दोऊ दिन उत्सव है याते और

काजर सुपेद हिंडोरा को बंधे सो बाही सांझ को बड़ो होई फो
र पवित्रा हू हिंडोरा को बांधे होई सो हू चौदस को उजे पाछे व
ड़े होई पवित्रा पहेरे तब झालर घंटा शंख बाजत कीर्तन
होत पोहेरे दंडवत करि जलसो दकु रके जलगारव बिंदप
रसमर्पे फेर सब को पवित्रा तार ३६० को पहेराइ फेर फू
लमाला न. ओर रेसमी पवित्रा पहेरइये सो हेतन पहेरे
होइ तो बड़े करत जांय फेर पादुकाजी को पवित्रा पहराइये
सूत को न. जरी को न. फूलमाला न. रेसमी को फेर श्रीप
लना रूपैया भेट करिये फेर भोग धरिये पवित्रा एका
दशी को धरे सो श्रृंगार बड़ो होइ तासा पवड़े होई ओर नित्य
श्रृंगार में पाछे पवित्रा धरे -- सो देव रखी तांई सो प्र
भो के दिन तांई सो श्रृंगार बड़ो होई तब पवित्रा हू बड़े
होई सुपेद काजर बाही दिन रहे द्वादसी को झालर ग
लावी रहे सबेरे गोपाल वल्लभ मे मनोहर के लडुवा
को मेदा चोरीयां मिलिके ऽ।।।= घृत ऽ।। खांड ऽ२।। उ
त्सव के भोग मे सकरपारा मेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ२
मीठे शाक की खांड ऽ।। चिरोजी न. सादा मिलिके सेर ऽ।
छाछ के बड़ा की पिठी ऽ।। घृत ऽ= हांडी मलड़ा को दूध
ऽ४ बूरा ऽ।। खीर छुहारा की दूध ऽ३ बूरा ऽ।।। प्रासबो
पाटीया मेदा ऽ१। घृत ऽ। खांड ऽ२।। उत्सव भोग मे ^

न· मिश्री सेर ऽ २ यह सब भोग सवेरे पवित्रा धरे नवनीतराज
७७ भोग के साथ आवे और मिश्री हू आवे और भोग के
समे पवित्रा धरे नवनीतमिश्री की थार न· सकरपा
रा मधानाकी कटोरी इतनो संध्या भोग साथ आवे
धूपदीप करी जलकी झारीबोरिक करि टेरा दे बाहिर
आइये समय भये भोगसराय संध्या आरती मोती
की करीये रूपे को दीवला धरि राखीको जुदी काढि
राखीये द्वादसी को १२ गुलाबी पिछोड़ा सुनेरी
किनारी को मस्तक पर पन्ना को मुकट धरे और न
ये पवित्रा द्वादसी को फेरि धरे स्तत कोतो नहीं न·
बादला कोइ बहे रहे श्रृंगार मस्ये पवित्रा धराय के श्री
बालकृष्णजी के ओटनी पवित्रा के ऊपर धरावनी सो
ऐसे ई पवित्रा दिन ४ नांई रहे राखी पून्यो तांई श्रृं
गार में पवित्रा धरे पून्यो पाछे धरे नहीं और द्वादसी
को हू भेट धरनी और जैसी सी कर्य और पादुकाजी
को द्वादसी के दिन नगेय सेवा करि चुके नवपवि
त्रा धराइ के तापर ओटनी उढावनी ऐसे ई राखी पू
न्यो तांई पवित्रा धरे द्वादसी गोपालवल्लभ में सेवके
लडुवा को मेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड़ ऽ १।। भोग में मि
श्री ऽ १।। श्रावण सुदी ।। १३ ।। बनरा नागा को मनो

र्थ वस्त्र श्यांमा न- हरे नहीं गोपालवल्लभमे सीराकोरवा
सेर ऽ।। घृत ऽ।। खांड़ ऽ १।। शाक केंकोड़ाको आरोगे
भाव रासुदी।। २४।। श्रीविठ्ठलरायजीको जन्मोत्सव
अभ्यंगतो नहींहोई वस्त्र पीरो धरनो लालटवकीको
चनड़ीके अथवा अंबरके केसरी अथवा लीलकापागो
मस्तकपर दुमालो अथवा कुलह गोपालवल्लभमे
सगरे दिनको बालभोग मंगलातें सेनके बंटातांई जाते
बीते - छूटी बूंदी मिलमाको होई गोपालवल्लभ ह्याही
को जलेबीको मेदा ऽ।। घृत ऽ।। खांड ऽ २।। छूटी
बूंदीको बेसन ऽ।। घृत ऽ।। खांड़ ऽ १।। मीठेला
कको खांड़ ऽ।। हांड़ी मलड़ाको दूध ऽ ४ बूरा ऽ।।
अधिकी मेखीरिको दूध ऽ २ बूरा ऽ।। छाछकेव
ड़ाकी पिठ्ठी ऽ। घृत ऽ- सखड़ीमे सेवको पाटीया
आरबो आरोगे मेदा ऽ १। घृत ऽ। बूरा ऽ २।। राज
भोगमे धोवादार त- तीनकूदा पापड़ बड़ी तेल ऽ।।
औरस बनित्यको। भाव रासुदी।। १५ रखीपून्यो
बड़े श्रीदामोदरजी श्रीगुसांईजीके नातीतिनको उत्सव
अभ्यंग लालक संभी पिछोड़ा सुनेरी किनारी लम्पो
केसरमल पाग नानियां कसंभी श्रीस्वांमिनजीको
साड़ी कसंभी भीतर वस्त्र दोऊ हरे श्रीबाजलहम

न॰ जीको ओढनी कसुमल सुनेरी किनारीकी पाग क
०८ सुमल आभरण हीराके गोपीवल्लभमे सेवको
आरबो पाटीया आवे मेदा ऽ१। घृत ऽ। खांड सेर ऽ२॥
राजभोगमे सखडीमे धोबादार तीन कुटा पापड़
वड़ी अनसखडीमे गोपालवल्लभमें मंगलके
लेके सेनके बटा ताई गोपालवल्लभ सदा छुटी पूं
दी जलेबी आरोगे सगरे दिनको राजभोग मेदा
ऽ२ बेसन ऽ१॥ घृत ऽ३॥ खांड ऽ७॥ मीठे
शाककी खांड ऽ॥ खीरिके दूध ऽ३ बरा ऽ॥ हां
डीमलजाके दूध ऽ४ बरा ऽ॥ छाछके बड़ाकी पि
ठी ऽ। घृत ऽ= इतनो दामोदरजीके उत्सवको
आवरारवीके उत्सवकी सामग्री राखीवां
धिबेकी बिगत दिनमे भद्रा न होइ तो गोपी
वल्लभ सरे नवकड़ी दूबरा आरोगे पाछे दर्स
न खुले अधिवासन तो पवित्रा साथ भयो ही
है तातर घंटामे तिलक होइ ठाकु
रको तिलक होइबेरे करीये अक्षत दोइबेर
लगाईये एक रखडी श्रीहस्तमे राखो रेसमकी
धरिके बांधिये दोनो श्रीहस्तमे और ठाढेस्व
रूप होइ तो गादाउ श्रीहस्तमे तो भुजमे बांधी

ये अवकास होइ तो श्रीस्वामिनीजी को बांधिये रे
ऊश्रीहस्तमां और बीड़ा २ नित्य के फेरि श्रीपादुका
जी को तिलक करि अक्षत लगाय राखी खूंटीजी को बां
धिये ऊपर १ तकबांधनी खूंटी न होई तो पादुकाजी
के ऊपर धरिये बीड़ा २ राखी के कुमकुम लगाइ नव
कड़ी आमें गादी आगे धरिये फेर चरणारविंद पर तुल
सी समर्पि भोग धरिये धूप दीप तो राजभोग के साथ ही
होइगो पाछे नेत पधारे राजभोग आरोगिवे को पधारे
सबेरे भद्र ग्रहई तब राजभोग के दर्सन करि साज उठाइ
झारी भरि भरि के तब तिलक करि अक्षत लगाई बीड़ा २
कुंमकुंम लगाइ गादी पर धरिये तबकड़ी में राखी बांधि
ये तब उत्सव को भोग संध्या भोग साथ आवे एक के
री सधाना की उत्सव के भोग की आधि की में आवे धूप
दीप जल सीं सखोदिक करिये भोग सराय आरती
करिये फेरि श्रृंगार बड़ो करिये ग्वाल कर सेन भो
ग धरिये झारी भरिये फेर समय भये सेन भोग सराइ
सेन आरती करिये फेरि राखी बड़ी करि के भूषन
को पोटा इये भादो वदी ॥ २ नपा ३ कोट
पारासि को चंद्रमा ह्नेइ सो आछो दे रवि के ठाकुर को
हिंडोरा तो विजय करिये गोविंद स्वामी के हिंडोरा ४

न· गवे आरतीमोतीकीचंनकोदीवड़ाधरिकीजे फेर
७९ राईलोनकीजे न्योछावरकीजे प्रदक्षरागा ३ करिदंडव
तकरिटेरादै ठाकुरकोमंदिरमेपधराय फेरिश्रृंगार
वड़ोकरीये सेनभोगधरीये सांझकोभद्रा होइतोसवे

रेश्रृंगारपाछेअथवागोपीवल्लभआरोगेपाछेहि

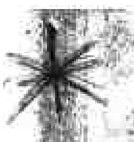
डोरानीविजकीजे

भाद्रपदवदी ॥७॥ जन्माष्टमीकेपेहेलेदिनवस्त्रक
शरमलधरे सांमग्रीआगेलिखीहै

श्रीकृष्णायनमः॥ श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥ अथश्री
नवनीतप्रियाजीकेघरकोनित्यकोसेवाक्रमलिख्यते॥
प्रातःकालसेवाकीचिंतारारिवउठनो॥ प्रथमकंठीमालास्म
भारनी॥ प्रभूनकोनामलेनो॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी
श्रीगुसांईजीकोनामलेनो॥ देहकृत्यकरनोदंतधावन
करनो॥ मुखमुद्राधोवोइारखनो॥ तेलनलगाइस्नानक(रनो)
(जो) मंदिरमेभगवदसान्निध्यवासनआवै॥ राकादसी
कोवीड़ानखानो॥ तेलनलगाइस्नानकरनो॥ तदनंतरअं
गोछाकरिअपरसकेधोतीउपरनापहरने॥ द्वादसी
केदिनतेलनलगावनो॥ पाछेआसनपरतिलकमुद्रा
धारणाकरने॥ मृदाप्रजांगमेवतत्त्॥ चक्रांकितसदा
तिष्टेत्॥ इतिनिबंधवाक्यात्॥ ललाटविषेपद्म॥ १
श्रीगोपीजनवल्लभी॥ २॥ दक्षणभुजाविषेचक्र॥ ४
ऊर्द्धदेशविषेशंख॥ १॥ नारायणी॥ २॥ ऊर्द्धदेशविषे
श्रीगोपीजनवल्लभी॥ ३॥ टेढा॥ राकओरपद्मदेने॥
वीचमेवामभुजाविषे[illegible]ओरदेने॥ पद्म
वीचमेवामभुजाविषेशंख॥ ४॥ उर्द्धदेशविषे
चक्र॥ १॥ अधोदेशविषेनारायणी॥ २॥ गदाध
दोनोआड़ीबाहूके॥ श्रीगोपीजनवल्लभी॥ ६॥
हृदयविषे॥ दक्षणओरकेस्तनपर॥ श्रीगोपीज

न- नवछत्रमीय चक्र ३ शंख २ पद्म ४ यांमखोरकेस्तन
८० पर शंख ३ गदा ४ गरेमे रखके श्री गोपीजनवल्लभी
-श्रीर १ चक्र यारीतिसोंस्तनभरिकरने नाभीपर २
कटिकेभागपर कटिकेपाछे मस्तकपर इतनेठिकाने
श्रीगोपीजनवल्लभमें मुद्रादेनी पाछेदूदन मस्तक
रमुद्राधारराखीके मंदिरके रवासाजदन खडेसो हाथ
धोईये मस्तकके जोयाहिर चिकनाईनरहे यातेस्वर
डी हाथधोईए नोहूयाहीनेधोईये सरवडीकीचि
कनाई हाथमेरहे रवरवडीसोधोवने हाथधोयमंदि
रकोदंडवनकरि मंदिरकेनावाखोजने पाछेमंदिर
मेसाजहोइसोसवकाढि झारी २ दोनोप्रभुनकी
न-सैयाकेपास रहतीहोई सोवदोऊझारीकाढिके
झारीभारिबेकी ठौरहेइ तहांधरनी बंटा सैया औरही
न-बीड़ाकी खवकडी येसाज काढिजलघरमेधरनी
जलघरीयापातनकोमाजें प्रथमप्रभुनकेपासकीन
और रात्रिकी
रीहोई सो नंबंनो पाछेमालाफूलनकी
सैयाकेकोनेपासहोई सोकाढिदनी पाछेहाथ
धोई निजमंदिरकाडनो पाछेसिंघासनवस्त्रकरनो
पाछेहाथधोयसिंघासनउटाकेके बिछायनो आपरगादी
समारिके तकीयापाछेकोतमारिके राखनो पाछे हाथ

पुरवचल्लगादीपासरारवनो सीतकालहोइतोगादी
परगद्दलसुद्धां उढाईये पजगडीकारिये पाछेफे
रिसुपेदचादर बिछाईये कसनांबांधिये पाछे
श्रीपादुकाजीकोकुलेलसमर्पिये बहुकेदि
नान द्वादसीकेदिनाकुलेलनसमर्पिये पाछे
पलगडीपरपधरायजाडोहोइतोरजाई १ न-२
न-३ तांई उढाईयेशीतानुसार उस्नकालहोइ
तोस्वेतऔटनीऔढे पाछेजहांश्रीपादुकाजीवि
राजतहोई तहांपधराईये पलगडीसिंघासन
केदक्षणभागविषे देवस्यदक्षणेभागे पूजये
द्गुरुपादुका इतिवाक्यात पाछेवहांकेचीकने
भरेहोइसोधोयकेनेरवडीसो पाछेजाडेनकेदिनहो
इतोसेकने पाछेसिंघासनपरतेरजाईलेसोकि
सेयामंदिरमेजाय नामलेमधुरस्वरसोश्रीराजीवि
लोचन समरण करता उजागरानांदिनेश श्री
गोवर्धनोद्धरणधीरयेनामले प्रभुनकोजगावने
वल्लभकुलविनांओरकोप्रबोधकोअधिकार
नही यातेनामले श्रीअंगऊपरतेसुपेतीउस्न
कालहोइतोचादर पाछेप्रभुसैयापरवैठे रजाई
उढाइयुगलस्वरूपसंगहीपधरायगादीपर



न० गदर उढाईये श्रीमुख खुल्यो रहे ओर सब श्रीअंग
८१ ढांपिये उष्णकालमे अंतरबास कटिपर राखीये पा
छे दंडवत करि हाथ धोय चोकी देउ उठाय मंगल
भोग धरीये झारि भरि होइ तो प्रभुनके बांमभाग सि
ंहासन पर धरीये पाछे हाथ जोड़ प्रार्थना करी
ये जो श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी की कानि ते कृपा
करि आरोगोगे ऐसे प्रार्थना करि भोगमे करनो पा
छे सैयामंदिर मे जाईये निजमंदिर की ओर कोटेरा दे
पाछे सैया उठाइ सैयामंदिर झारिये मंदिर वस्त्र करीये
पाछे हाथ धोई सैया उठाके वस्त्रसो फेरि बिछाईये
सिरहाने की ओर पड़वईया लगाइ तापर सुपेती बिछा
इ तापर भडूची खेस तापर सुंदर चादर बिछाईये पा
छे कसना कसीये सुधेरीतके जाली पाड़िके न कसीये
फेर सिरहानेको रूखजवो तकिया धरीये पाछे २ गिर
दा के तकिया नसो लगाइके धरीये पाछे खवो तकि
या १ पायन धरीये ... चौपड़ धरीये
पाछे स्वेत मिहीं चादर उढाईये सीतकाल होइ तो सु
पेती उढाईये पेहेले १ पाछे २ ता पाछे जब बोहो
त सीत पड़े तब अटाई सुपेती उढावनी ऐसे क्रमसो
जब सीत बढत जाइ तेसे तेसे उढावनी ओर घरनमे

सीतकालमेकसनानहींबांधन अपनेमहांबांधन

है उष्णकालहोइतोस्वेतमिहीचादरहीउढाईये

रात्रिको और उष्णकाल आवरा भाद्रपदमे रंगीन

चादर चुनके पायनधरनो ऊपरनेचोरसादांपनों

इसरीसैया होमवेबिछावनो पाछेश्रृंगारकोसाजका

टनो जेसोइछाहोई तेसोसाजकाढनो ताकोविधी

सीतकालमे रुईकोवागा पटुकास्वेतखासाको नी

मासाठनो मोजापाटके पटकासूतको सूथनपा

टकीननीयास्वेतसूतको औरसिखाकीटोपीरुई

की श्यामवस्त्रकीटोपी पाछे धकुलहीटिपारोफेंटा

पगाल दुमालोसोएकपागबांधे तवतोकरराफूल

धरावने वाकीसर्व अंगारमेकुंडलधरावने और

जरिकोसाज दसहराते प्रबोधनीतांई तापाछेपाट

कोवागाधाररगाकरे पाछेवसंतसे त्नवत्ते सूतकेवा

गाधाररगाकरे पाटकेबागाकी इजारीयहांरगितनही

औरसीनकालमे मुकटधाररगाकरे कात्तिकीपूरग

माकेदिन मुकटधाररगाकीयोहोई सोफेरवसंतमेदो

इवेरतीनवेरधाररगाकरे याप्रकारसीतकालकोसा

ज रुईकेवस्त्रनये प्रबोधनीते अंगीकारकरेवीच

मेसीतपडेतो पुराने रुईकेपेहेरे औरसैयाकेसिरहा

नेके नकियावालिस्त कहावतहै तिनके दोऊ ओरकस्तू
रीकी थेली २ बांधनी ओर दोऊ वालस्तपर स्वेतवस्त्र
दोहरो करिके लपेटने दोऊ गिरदा ऊपर रबोल स्वेत शै
याके वस्त्र न. गादीके न. तकीयानके न. मुखवस्त्र
* प्रभाते लपेटी प्रातिभ्मिपरवदलनो उष्णकालको

साजराम नवमी पाछे गरमी वोहोत परेतो उराने पिछो
डा धराईये अक्षय त्रतीयाते नये पिछोडा धारणा करें
स्वेत न. अरगजाई न. पाग कुलही पगा फेटा स्क
पेची दुपेची टिपारो पिछोड़ा स्वेत अरगजाई छापा
के केसरके चोवाके कस्तूरीके छापाके धोती पर
दनी मदन्न काछ्ये उष्णकालके श्रृंगार शीतका
लमें टिपारेके संग वागो उष्णकालमें मदन्न काछ
जेसो काल होई तेसो साज काढे मंगलभोग सराई
ये आचमन कराईये आचमनकी झारी न्यारी
रहे वासो त्रष्टीमे आचमन कराईये शीतकालमे

उष्णजलसो स्नेहतो अपने शरीरको उष्णकालमेसी
तलजलसो पाछे मुखवस्त्र दोऊ ओ
र फेरिके कराइये बीड़ा २ धरीये ऐसे प्रातिभोग
सरे तव कीजै पाछे मंगला आरती कीजिये एक
मंगल आरती होत वेरा श्रीहस्तमे न धरे श्रीवालक

मजीवेरगुकवङ्कधाररगानकरे अकेलीवेरगुपासधरिहे
वेत्रनहीं ठाटस्वरूपको राजभोग आरतीन थासंध्या आर
तीसमयवेरगुवेत्रधाररगाकरे यहरीतिहै मंगलआरती
करि दंडवत करि हाथधोइ सीतकाल हे आगे हुयाकोकि
प्रभुको गादीसु हों पाटीयापरपधरावे पाछेश्रृंगारके
पीतापाटीयापर आगादिके आगेधरिये तापरप्रभुको
धराइये पाछेश्रृंगार रात्रिको होइ सोबड़ोकरीये नेत्र
अलंकारधाररगाकरनहोइतोवहबड़ेकरीये तनियांबडो
कीजे पाछेश्यामस्वरूपहोइतोफुलेलसमर्पिये गौर
स्वरूप होइतो अभ्यंगकेदिनफुलेलसमर्पियेनित्यनहीं
श्यामस्वरूप नित्यह्मांनन करे गौरस्वरूपनित्य ह्मांनक
रे उस्नोदक हाथपरडारिदेखीये परातमे पीढावीच
मेधरीये तापररंगकस्वेतवस्त्र दोहरोविछायता
पर प्रभुनको पधराय ह्मांन चारि लोटासोकराई
ये थोरेसोजल जलजलमे राखेहे सबजलताप्रभु
नकेचास्यो ओरफेरिजल परातमेडारे पाछेअंगव
स्त्रकीजिये शनीवारकेदिना अभ्यंग प्रातिशनिवा
रको कराईये परंतुषष्ठीद्वादसीकेदिनाशनिवार
आवेतो अभ्यंगनकराइये आगेपाछेकराइउत्सवको
कराईये ॥ अभ्यंग की बिधि ॥ परातमेपीढापरप्रभु

न. ८३

नकोंपधराय फुलेलसमर्पिये घरकेस्त्रीजन श्रोरसबपु
रुष चरणारविंदपर फुलेलसमर्पे उत्सवकेदिन श्रोरघा
ऊदिननहीं फेरिश्रांबजाछांनीराखेहोई सोउनकोस
मर्पिये पाछेलोटा १ सोस्नान कराईये तदनंतर
केशरचंदन विधिन समर्पिये उत्सवकेदिनसबघ
रके चरणारविंदपरसमर्पे याप्रकार श्रभ्यंग कराई
पाछेलोटा ४ सोस्नानकराईये पाछे श्रंगवस्त्र हाथ
मे फेराई प्रभूनको श्रंगवस्त्रमेपधराय पोछिये पाछे
श्रभ्यंगकेदिनश्यामस्वरूप होयतो चोवासमर्पिये श्रो
रगौरस्वरूपको श्रत्तरसहँमर्पिये नित्यनहीं पाछेश्रृं
गारको श्रारंभकीजिये पेहलेनानिया पाछेश्रलंका
र पहरनहोयतो श्रलंकारधारणकराईये पाछेजे
सोकालहोयतेसो साजधारणाकराईये सबश्रृंगार
भयेपाछे पात्रपधराईये यहप्राचीनरीतिहे श्राभ
रणसर्व्वत्रपेहराईये (गुंजा) तापाछे सबने पाछे चंद्रिकाध
राय फूलकीमाल पेहराये पाछे श्रुकेली बेणुश्रीहस्त
मेधराय श्रारसीदिखाईये पाछेश्रृंगारकीयेहोई
सोचरणस्पर्शकरे घरकेसबमिल श्रृंगारहोतमेचर
णस्पर्शकरे याकोभावजो चरणारविंदभक्तिरूपहे
उनकेस्पर्शतेभक्तिकोउदयहोई भक्तनकेपुष्टिमार्गी

यभक्तनविषे श्रेष्ट श्रीगोवर्द्धन हरिदासवर्य उनके चर
णारविंद के स्पर्शन ते आनंदाधिक्यमयो हे नाथ मद्वि
रवला हरिदासवर्यो यद्राम कृष्ण चरणस्पर्श प्रमोदः
इति वाक्यात [illegible] के चरणारविंद के पुत्रा के
न पोहोंगे पितर हेन सदाई यातें पुष्टिमारगीय भक्त
नको चरणारविंद स्पर्श करनो पाछे [illegible]की
माला बड़ी करि प्रभुन को गादी छुड़ाय पाटीया ते सिं
घासन पर पधराईये शीतकाल होइ तो अंगार भरे
पाछे गादी पर फरगुल ओढे वो हेमन्त सीत होइ तो ग
दर ओर फरगुल ओढे उष्णकाल में कछू नहीं पाछे
सिंघासन के आगे मंदिर वस्त्र दे चोकी मांडिये सख
डी की एक न्यारी सी मांडिये अनसखड़ी सखड़ी श्री
गोपीवल्लभ में संग आवे सो एक श्रीगिरधरजी
के घर की रीति है नित्य सखड़ी न बनि आवे तो एकाद
शी को ते सखड़ी कीजिये श्रृंगार भोग आरोग
टिये मंगलभोग आरोगे है सो इतरो श्रृंगार होत
में रहे श्रृंगार होत में कटोरी धरनी सो एक छोटी
नवकड़ी में एक कटोरी मिठाई की एक मेवा की
ऐसे दो चार कटोरी नवकड़ी में साजि ऊपर वस्त्र
ढांपिये यह श्रीनाथजी के यहां की रीति है और श्री

न. ८४ नवनीत प्रियाजीके यहां तो छोटे ठोर नग १० न. मा
खन न. मिश्रीकी बरणी न. दहीको कटोरा न. स
धानाकी बरणी इतनो कटोरीमे आवे सो कटोरी श्रृं
गार भरे पाछे गोपीवल्लभ भोगके संग कटोरी आवे
अथवा कटोरी नवनीत आवे तो छोटी सामग्री धरीये
श्रृंगार होय तामे प्रभुके हारि नी और रखनी श्रृंगार
भरे पाछे ठाकुरजी फेर भरि धरनी कटोरी गोपीवल्लभ भो
ग सरे नवनिकसे गोपीवल्लभ साथ भोगमे आवे श्री
जीके यहां कटोरी श्रृंगार की निकसे है औ गोपीवल्लभ
भोग इतनी सामग्री धरनी थार १ भातकी डबरा १
तारिको वड़ीको शाक पापड़ अथवा एक घृतकी क
टोरी इतनो सखड़ीमे दूसरी चोकी अनसखड़ीकी
तामे मेदाकी पूरी चनकी पूरी कटोरी १ दहीकी क
टोरी १ सधानाकी कटोरी १ सिखरनकी कटोरी १
बूराकी एक दोइ शाक और खरखरी मेदाकी पूरी
२ इतनो गोपीवल्लभ भोग धरनो कारि ता इ वाम
भोग धरनो दोइ झारीको न लुआ खोलि धरनो प्रति
भोगमे प्रार्थना करनी मंदिर के टेरा दे निकसि दंडव
त करि पाछे गोपीवल्लभ भोगको समय होई तब भो
ग सरावनों आचमन मुखवस्त्र करइ बीड़ा २ प्रभु

केदाहिनीदिसधरिभोगको उठाइये पाछेचोकीकोजल
घरीयादागरबुरचिकेधोवे पाछेमंदिरमे सरवड़ीधोय
मंदिर वस्त्रदे सूकोकरीये पाछे दूध घारीया घै
याकैआवै सो नवकड़ीघैयाकी ७ आरोगावनी
पाछे उपरा दूधकौ आनीरानाय पोनलकोवड़ीगोपदधं
रि दूधमे बरायमिलाइ पाछे रूपाकी कटोरीमे दूध
सीरोकरीये पाछेआरोगायवे.नायकहोई नवसिं
घासन आगेपांनीको हत्थदे पड़गीसुद्धप्रभूनके
आगे उबराधरीये पाछे प्रभूनकेआगे कटोरीसो
दूध हलाइ कटोरी छोड़िदीजिये पाछे प्रार्थनाकरि
टेउवत्तकरि टेरगेले प्रभूपास केबीड़ा होइसोनिका
सिर यह श्रीनाथजीके यहांनिकसे है श्रीनवनी
तप्रीयाजीके बीड़ा उबरासरे पाछे दूसरे नहीधरेजांइ
है तातेयेहीबीड़ारहे गोपीवल्लभकेधरेहै
सो पाछेमंदिरकोटेरादेनानिकसनो आगनिके
दोरझारीभरीये इतनेमे बनकोसमय होई
सोतीन्योझारीटेरनरएकनवकड़ीमे नुजसीबोहे
तसीही मंदिरमेजाइये पाछेदोऊझारीहोइसोप्र
भूनकेदोऊओर नवकड़ी नीचेधरिधरनी पाछे
आचमनमुखवस्त्रकराइ बीड़ा १ धरिश्रीवाल

न-
२५ कृष्णाजीहोइतो उनको पालने पधराईये पलनांमेसु
पेत्तीसेयापरबिछेहे इतनीसुपेत्तीबिछावनी ऊ
परचादरिबिछावनी पाछेसिरहांनेपांयत्तताकि
याधरने शीतकालहोइतोश्रोटिनेकीसुपेत्तीचा
दरिबापे पर्यांतकीओरगुनदेधरनी ताजपल
नाकोछोटोसोश्रंगार होतमें एकजनीपलनांबिछा
वे पाछेश्रीबालकृष्णजीके पाजनांकेबीचोंबीच
गादीसहूंपधराईये पासपडुगीपर पलनांकोभोग
गादीकेश्रागेधरीये पलनांकेभीतर हीवस्त्रतांपिध
रीये एककटोरामेकबहूयपडीकबहुवेसनकीसेव
सोंनलगाइके एककटोरीमिश्रीकी एककटोरीमं
खनकी एककटोरी मेवाकी खारकन-गिरीकेटूंक
इतनोपलनांमेधरनो पलनांहलावनो ऊंकुना २
पलनांकेभीतरधरने खिलोनाकीतबकडीचोकीपर
प्रभुपासधरनी पाछेसिंघासनकीचोकीमांडिराज
भोगधरनो पेहेले ... भक्तिकोमलभाव
त्यात पाछेएकडबरा दारिको एकडबरामूंगको एक
डबराकडीको रसोईपोडबराथारकेपाछेरहे थारके
बराबर बांमश्रोर खीरिकेकटोरा थारकेपाछेरदेरादे
दारगातश्रोरकोरबीरकेपाछेछाछिकोडबराथारकेदां

हिनीऽस्रोर दूसरीयारमेरोटी नामेलीटी कोकटोरा पाछ
लीऽस्रोरसाककेकटोराऽजेशाक ऽस्रागेबघारे पाछेशा
कनकेकटोरामेंवड़ी पापड़ यापकारसखड़ीकीचोकीपर
साजनें पाछेऽस्रनसखड़ीकीचोकीपरऽस्रनसखड़ीसा
जनी बीचमेंलुचईकीथारधरनी वाकेऽस्रागेएककटोरा
सिखरनको एककटोरादधिको एककटोराखराकी
न-मोरबनकीवरराी १ एककटोराछाछिको पाछे
एककटोरीसधानाकी एकडबरीयादूधको एकक
टोरीमेंऽस्रनसखड़ीके शाक होइसो एककटोरीलोंनकी
याप्रकारऽस्रनसखड़ीभोगसाजि पाछेप्रभुनकोपल
नांतेसिंघासनपरपधराईये पलनांपासकीठारीहो
इसोफेरेभारिसिंघासन पासधरीये पाछेधूपदीपकी
जे प्रथमधूपमें ऽस्रंगाराधारेऽस्रगरकोचूर करि थेलीमें
राखीये सोऽस्रोरासोमेंछिदाहिने हाथसो प्रभुसांहे र
हि फेरीये बांमहाथसोघंटाबजाईये फेरदीपमेंदो
इवातीधारे प्रज्वलितकरिकेफेरीये घंटाबजाईये पा
छेदीपनोबाहिरकाढिये धूपएकऽस्रोरधरिदीजे पा
छेहाथधोयप्रभुनकेचरणारविंदपरसमर्पिये तुलसी
नवकड़ीमेंसे धोरीसीले हाथकी ऽंजुलीकरिसमर्पराग
धकोऽस्नोकपढनो पाछेपंचाक्षर मंत्रसो प्रभुनकेचरणा

न. रविंदविषे तुलसीसमर्पिये पाछे हाथधोय धार सां
८६ नियेभातथारेसोचमचासो घृत मिलाईये पाछेवह
चमचाघीकेकटोरामेधरिदीजे प्रभुनकीओरचमचा
कीडंडीरारवीये यारीतिसोझारसांनिये पाछेहाथ
धोयतुलसीकी[illegible]उठाइये [illegible]महामं
त्रसो सबसामग्रीनमेडारीये प्रत्येक २ सबकटोरा
नमेचमचा धरीये बोहोतचमचा नहोई तोमीठीसां
मग्रीनके कटोरानमेधरीये पाछेवांमओरकीझारी
उठायशंखमेथोरोसोजलमेलिये पाछेझारीठिकां
नेधरीये पाछेवांमओरकीझारी उठाय शंखमेथो
रोसोजलमेलिये पाछेझारीठिकानेधरीये पाछेसं
खकोजल हाथमेलेमहामंत्रसो सबसामग्रीनपर
छिराकिये शंखठिकानेधरिदीजे पाछेप्रार्थनाकरि
धूपलेत आचमनकोझारीलेत दंडवतकरि निजमंदि
रकोटेरादै निकसीये डेवरीमेरकेवेल प्रभुपासहो
ई सोनिकासने पाछे[illegible]सरायवेकोसमयहो
ई नवसराईये आचमनमुखवस्त्रकराय वीडीआ
रोगाईये सोरहपांन २ गिलोरी उनमेएकएकलौं
ग एकगिलोरीपेहेलेप्रभुनकेश्रीमुखसोलगाइत्र
षीमेडारनी पाछेपांनसगरेनमेचुनाजगावतजाई

cpk 417

पांनकीचीरउतारिके तीनतीनपांनतीकोएककरे आरो

गावनी पाछे बड़े पांन आवे नवरंकरएक पांन आरो

गावमो दूसरीगिलोरी आधी बीड़ी आरोगे ताकेबीच

मे आरोगावनी नवरंकपांनरहेतामे बरासरंकचो

खाभारि उपरि मिलोरी आरोगावनी या प्रकार बी

डी आरोगाय चररणारविंद पर तुलसीकाढि प्रसादी

बीड़ीमे धरिये बीड़ीबांधि प्रसादी गवारवामे धरियेत्र

छीरबगारि धरीये पाछे प्रभूपासकी दोऊ झारी निकासि

फेरिभरनी एक प्रभूनके बामदिसधरीये एकझारी

सैयापासरहे पाछे भोगसराय चोकखा हेरकादि

मंदिर धोय मंदिर वस्त्रासो मंदिरसूको करि प्रभूनको

फूलकी माला पेहेराय बंटामे बीड़ा २ आछवाचारे

ढकनादे प्रभूनके दक्षण आरधरीये बाम ओर झारी

धरिहेदे दूसरी झारी नवपलंगपे बीड़ा २ वा ४ से

याके बामभाग धरिये एक पड़गोऊपर बंटसैया

भोगको बंटामे डेरा जितने बनिआवे इतने एककटोरी

द्राखी एककटोरी मांखनकी एककटोरी सधानाकी

इतनो साजि बंटाको ढकनादे सैयाके दक्षिणभागधर

नो बीड़ाझारी और सबवांमभागरहे पाछे प्रभूपास

सिंघासनपर दोऊ ओरतकिया धरने दाहिनी ओरके

नं. रविंदविषे तुलसी समर्पिये पाछे हाथधोय थार सां
२६ निये भाजन धोरे सो चमचा सो घृत मिलाईये पाछे वह
चमचा घीके कटोरामे धरिदीजे प्रभुनकी ओर चमचा
की डांडी राखीये यारीतिसो थार सांनिये पाछे हाथ
धोय तुलसीकी लकडी उठाईये एक एक कटोरानमे महामं
त्रसो सब सामग्रीनमें डारीये प्रत्येक २ सब कटोरा
नमे चमचा धरीये वोहोत चमचा न होई तो मीठी सां
मग्रीनके कटोरानमे धरीये पाछे वांम ओरकी झारी
उठाय शंखमे थोरो सो जल मेलिये पाछे झारी ठिका
ने धरीये पाछे वांम ओरकी झारी उठाय शंखमे थो
रो सो जल मेलिये पाछे झारी ठिकाने धरीये पाछे शं
खको जल हाथमे ले महामंत्रसो सब सामग्रीनपर
छिराकिये शंख ठिकाने धरिदीजे पाछे प्रार्थना करि
धूप लेत आचमन की कारि लेन दंडवत करि निजमंदि
रको टेरा दै निकसीये डेवरासरिके बीच प्रभु पास हो
ई सोनिकासने पाछे जब भोग सरायवेको समय हो
ई तब सराईये आचमन मुखवस्त्र कराय बीडी आ
रोगाईये सोरह पान २ गिलोरी उनमे एक एक लौं
ग एक गिलोरी पेहेले प्रभुनके श्रीमुखसो लगाइ अ
ष्टी मेडारनी पाछे पान सगरेनमे चुना लगावत जाई

पांनकीचीरउतारिके तीनतीनपांनतीकोएकवारे आरो
गावनी पाछे बड़े पांन आवे तवएकएक पांनआरो
गावनो दूसरीगिलोरीआधीवीड़ीआरोगे ताकेवीच
मेंआरोगावनी तवएकपांनरहे तेमेंवरासएकचो
खाभरिडारिगिलोरीकरि आरोगावनी याप्रकारवी
ड़ीआरोगावे पाछेचरणारविंद पर तुलसीकी गादीप्रसादी
वीड़ीमेंधरीये वीड़ीबांधिप्रसादीगवारबामें धरीयेत्र
षीरवगारिधरीये पाछेप्रभूपासकी दोऊझारी निकासि
फेरिभरनी एकप्रभूनके वांमदिसधरीये एकझारी
सेयापासरहे पाछेभोगसरायचोकीबाहेरकाढि
मंदिरधोयमंदिरवस्त्रसोमंदिरसूकोकरिप्रभूनको
फूलकीमालापेहेरायबंटामेंबीड़ा २ आधबाचारे
ढकनादे प्रभूनके दक्षिण ओरधरीये वांमओरझारी
धरीहेई दूसरीझारी त. तवकड़ीमेंबीड़ा २ वा ४ से
याके वांमभागधरीये एकबड़ीझारी बंटासेया
भोगकोबंटामे ठेराजितनेबनिआवे इतने एककटोरी
दराकी एककटोरीमांखनकी एककटोरीसधानाकी
इतनोसाजिबंटाकोढकनादे सेयाके दक्षिणभागधर
नो वीड़ाझारी ओरसबवांमभागरहे पाछेप्रभूपास
सिंघासनपरदोऊओरतकियाधरने दाहिनी ओरके

नं- तकीयापर मुखवस्त्र चुनिकेंधरनों पाछेवेरगुप्रभूनके
८७ श्रीहस्तमेधरीये वेरगुवेत्रश्रीहस्तसोलगाइठाढोकीजे
पाछेसिंघासनसोलगाइरवंडुमांडीये वापरसिंघासनव
स्त्रउलटोहोइसोबिछाईये गादीनवीसुपेतरवोलच

दासितीयारबिछाईये रंगपरआगेखिलोनानकीत

वकडीधरीये एकओरदोय एकओरदोय पाछेरवं

डसोलगाइ आगेपाटीयामांडिके तापररुईकीरवोल
तापर सुपेतीरवोल पाटीयाकेबीचोबीचचोपड़मां
ड़ियें पाटीयापर दक्षराआरेरवंडसोलगाइचोगान
दोयठाढोकरिधरनी एकछड़ीधरनी इनकेबीचमे
देइगेंदधरनी पाछेचोकीरुईकीरवोलतापरसुपेत
रवोलचढाइपाटीयासोलगाइ आगलीओरधरनी
प्रभूनकेबामओरएकपड़गीपरखिलोनाकीतवक
ड़ीधरीये पाछेपेड़ासैयासोलेके सिंघासनतांइबि
छाईये सोएकगादीसैयाकीपाटसोलगिकेरहे या
प्रकारपेड़ाबिछावनो पाछेआरसीप्रभूनकोदि
रवाइ राजभोगआरतीकीजे प्रभूनकेसन्मुख द
क्षराओर ठाढेरहिआरतीकीजिये आतिआरती
आयेपाछेये दंडवतकरिहाथधोय फेरिआरसी
दिरवाईये पाछेआरसीखंडपरठाडीकीजे पाछे

२

वेणुवेत्र बड़े करि दक्षरा श्रीर गादी पर धरिये पाछे टे
रादे माला फूलकी बड़ी कीजे पाछे सेया मंदिर में जाइ
चोरसो उठाइ श्रीठिव के वस्त्र को रवंट सिरहाने की ओ
र को मोड़ि दीजिये पाछे मंदिर में भोग आवे को रहत ह
ई ताकी सांकल लगाइ अनोसर कीजे निज मंदिर के क
पाट लगाय ताला मंगल कीजिये पुष्प की माला बड़ी की
नी होई सो दाहिनी ओर केत कीया पर धरिये पाछे सा
ष्टांग दंडवत करि बाहिर निकसि मंदिर को दंडवत की
जिये पाछे यथाशक्ति दोइ चारि वैष्णवन सो मिलि प्रसा
द लीजिये तामे थार को सांम्यो भात प्रसाद पे हु जो नीजि
ये

उत्थापन को समय होई तब उत्थापन कीजिये प्रथ
म देह कृत्य करि बीड़ी रवाय स्नान कीजिये पाछे तिलक
मुद्रा धारण करि मंदिर के नाजर बोलि तीन बार घंटा
बजाइ पाछे बठी हाथ धोई दंडवत करि मंदिर के क
पाट खोलिये पाछे सेया पास की झारी बंटा भोग को
बीड़ा कीतव कड़ी यह साज निकासनो पेड़ा उठावनो
पाछे प्रभु पास की झारी बंटा बीड़ान को तकिया पर
की फूल माला सब काढि यह साज सब ठलाइ जल
धरिया मांजे पाछे प्रभु पास की झारी हृदई सो भरि के

न. प्रभुपासधरीये पाछेटेरारवोचिउत्थापनभोगधरी
८८ ये सिंघासनपरहीगादीकेआगेवस्त्ररक्तबिछा
ईकेघाररक्तनांमे राकककटोरेमलाईकी राकक
टोरीखोवाकी और गरमेवा आदिनुकेजोमिलेसो उ
ध्यकालहुइनोमिश्रीकोयनादमोरीफिरनीसोकुंजामे
खोगपासभारिधरनो चनाकीदालिलोन मिरचमसालानमि
लाइधरनी यारीतिसोउत्थापनभोगधारिप्रार्थनाकरि
दंडवतकरिनिकसिये प्रतिभोगमेउत्थापनभोगको
समयहोई तबभोगसरायआचमनमुखवस्त्रकरा
इ बंटामेदोइवाचारिबीड़ाधारिप्रभुकेदक्षराअोरध
रिये फूलकीमालापहराईये बेणुवेत्रपाछेलेतकि
यासोठाटेकीजिये आधीधोईकेचोकीपासधरीये
झारीकीटोंटीढांपिये पाछेसीतकालहुइतोअंगी
ठीदहकायमंदिरकेद्वारभीतरधरीये उसकालहोइ
तोसवनगादाखिसकावकीजिये याप्रकारउसकाल
मेछिरकावदोइविरीयाकरनो पाछेसैयामंदिरमेजा
इसैयाफेरिबिछाईये ओढिवेकीचादरउढाईये न
कियागिरदाउठाई हाथ्याफिराइ फेरकसनाकसीये
सुपेनोउढाइसवारिबिछाईये इनविरीयानहोइसबेरे
रक्तओटहोइतोयाबेरडेटउठाईये पाछेहाथधोईदंड

वत्तकरि सबसाज उठाईये टिकांनेधरीये पाछेखंड
उठाइसिंघासनवस्त्रमोड़िये पाछेझारीबीड़ाकोवं
टा उठाइ फेरिभरिप्रभूपासधरीये पाछेसिंघास
नकेआगेजेलीयो होयसे पड़घीपरसंध्याभोगध
रीये मंगलभोगतेछोटे नगजीवाने आवेसोमामे
सधानाकीकटोरीधरीये पाछेरुवेतनाकियाबो
ठाडेहोई सोआड़ेकरि पाछेप्रार्थनाकरिबाहिरनिकसि
पाछेभोगकोसमयभरेभोगसराइ आचमनमुखवस्त्र
कराइबीड़ाधरीये फूलकीमालाभोगकेसमयधरेहे
इसोईसंध्याआरतीतांईरहे पाछेवेणावेत्रधरिसंध्या
आरतीकीजे पाछेदंडवतकरिहाथधोयशीतका
लहोइतोहाथसेकिलीजे प्रभूनकोपाटीयापरपध
राइ पेहेलेफूलकीमालावेणुवेत्रबड़ेकीजिये पा
छेश्रृंगारबड़ोकीजिये शीतकालहोइतोऊपरकी
मालाबड़ीकीजिये वागाराखदीजे उष्णकाल
होइतोपिछोड़ाबड़ोकीजिये पाछेतनियांमात्र
रहे आभरणमेदोइकरणफूलबेसरश्रीकंठमे
लड़ पाघपर लड़श्रीहस्तनमेलड़ चरणारबिंदमे
घुंघरायहश्रृंगाररहे उष्णकालमेसयनआर्तीपा
छेइतनोनरहे राकत्तिलकबेसर पागकीलड़श्रीकं

न-
८५

दमेलड़ न॰ श्रीहस्तमे मोतीकीलड़ न॰ घुघरू न॰ नखभू
षराइतनो श्रृंगाररहे श्रीस्वांमिनीजीकोमोकटिपेच
वाज्रबंध सीसफूल न॰ छोटेश्राभरन — — — सबबड़ेक
रने एकमालारहे सर्वकालमे श्रृंगारबड़ेकरिसिंघा
सनपर प्रभुनकोपधरायकेरहेद्रसोभ्रहयै पाछे
ग्वालको रवास पेहेलेधरेहै तारीलिसोधरीये समय
भरेभोगसराय श्राचमनमुखवस्त्र कराइ बीड़ाधरीये
पाछेझारिदेइ श्रोरधरि सिंघासनश्रागे मंदिरवस्त्रक
रिचोकीमांडिये पातरिबिछाईये पाछेसयनभोगध
रीये पहेलेभातकोथार पाछेदारकोकटोरा सयन
भोगकीदारिपतरीहेई एकमिरचकोटेलोसाक
एककटोराकढीको राजभोगकीकढीमेसोएकक
टोराकढीसरखड़ीरहत होई तहांटांपिरारवे सोसीत
लकढीधरे श्रोरपापड़सेके श्रोरलोंनसधानाको
कटोरो एकजलकीकटोराधरनो एकछोटोरामेभा
तमेलिचोकीकेनीचे पातरमेटांपिरारवीये तांमेचम
चारखरारवीये धूपदीप सयनभोगमे हमारेघर
नही पाछेप्रार्थनाकरि इंड्वतकरि टेरादेबाहिरानिक
से पाछेसयनभोगकोपोनबाटेसमय होई तबभोग
मेजाय दूसरोभोगधरीये प्रभुकेबांमश्रोरभीज्योहू

धरे पड़गीमांड़िये तापरदूधको उबराधरीये खालते
विशेषमीठोधरि चोकीके आगेवेठि चोकीके नीचेभा
तको टेरैकैराहोई सोले चोकीपरधारे दूधलेभातकेव
टेरामे चमचासोमिलाईये पाछेभातके पाससेसब
भातके ऊपरधरीये पाछेतनिकासि आवे पाछेसमयप्र
रेभोगसराय आचमनमुखवस्त्रकराय बीड़ा २ ध
रीये पाछेफूलकीमालासमर्पिये पाछेमंदिरमे
तेसखड़ी काढि मंदिरधोई मंदिरवस्त्रकरिशयन
आरतीकीजिये वेरगुवेन्नतो पेहेलेईसंध्याआरती
भरे पाछे श्रृंगारके आभरणके खंडमेधरिदीजिये
पाछेहाथधोई शीतलहोइतो हाथसोकिलोजिये पाछे
वागावड़ोकीजिये पाछेसैयापरओढिबेकोहोयसो
ओढिवेप्रमाणउढाईये पाछेयुगलस्वरूपकोसंग
हीशैयापरपोढाईये श्रीस्वामिनीजीकीछोटीवगजा
ऊरारवीये पाछेऊपरतेउढाईये पाछेबालकृष्ण
जीहोई तिनकोपोढाईये दक्षिणहस्तऊंचोरहे त्या
रीसैयापरयुगलस्वरूपकेसंगनहो पाछेझारीदो
इभरि सैयाकेदोऊओरधरीये लवकड़ीबीड़ाकी
वामभागधरीये झारीबीड़ाकेबीचत्रष्टीधरीये
सैयाभोगकोबंटादक्षिणओरझारीकेऊपरधरीये

न-
८०

वंगामे जित्तने ठोरवनिभ्रावे इतने न-राकनटोरी
मंरवन राककटोरीबराको राककटोरीसधानाकीया
रीतिसोधरिदकना ढांपिधरनों शयनकीमालापेहे
रेहोइसो सयनकेसिरहांनेकेकोनेपरधरनी शीत
कालमेसयाकेभीचेज्ञनिवछावनो उष्णकालमेनहीं
पाछेसिंघासनपरवस्त्र इलाईढांपनों पाछेश्रीपाद
काजीकोपोल्ंगवने पलगडीपरहाथफेरि श्रीपादु
काजीकोश्रंगवस्त्रकरिपलगडीपरपधराय जितनी
सुपेतीभीठाकुरनोओढे इतनीचादरिसोंठिनउलई
ये पाछेजहांबिराजतहोंई तहांपलगडीपधरा
ईये पाछेसीनकाजमे श्रंगोठी दीवानिका
सिसर्व त्रकीसांकल मारिमंदिरके तालामंगलकीजि
ये पाछेप्रसादीपाछायोडालेई मंदिरकोदंडवतक
रे बाहिरनिकसनों याप्रकार पुष्टिमारगीयवैष्ण
वसेवाकरे श्रीगिरधरजीकेधरकोसेवक

उषाकालमें ग्रहण होइ तव ग्रासतें पेहेले श्रृंगार वड़ो
करि ग्रहन ग्रास समय स्नान कराईये पाछें अंगव
स्त्र करि धोती उपरणा पेहेराय मस्तक पर कछु राखीये
नही ग्रहण समय कछु राखनो नांही श्वेतवस्त्र र
[illegible] अनवसर [illegible] सिंहासन रं
गीन रहै [illegible] पास रहै नहीं ग्रहण के मध्य सम
य प्रभुन को स्नान करावनो अरु कछु रंगके विष्णु र
तोत्पांदि श्रीमन्नंद राजकुमारस्य राहू जनित अनि
ष्ट निवृत्यर्थे यथानाम गोत्राय दानु मह मुत्स्रजेत
इति संकल्प: संकल्प पाछें उग्रह होय तब नभोज
न आवै तब आप स्नान करि टकटा पहरि व नई
धोती पहरि प्रभुन को स्नान करावनो पाछें भोग ध
रीये सवेरे ही सूर्यग्रहण भयो होय तो स्नान करा
इ पाछें वालभोग तरत हीं सिद्ध कराय भोग ध
रनो और प्रहर दिन चढ़े ग्रहण होय तो गोपीव
ल्लभ ताईं भोग धरीये पाछें ग्रहन तें पेहेले श्रृं
गार वड़ो करि पाट के धोती उपर्ना पहराइ वेठाइये
पाछें ग्रहण भए पाछें फेर श्रृंगार करि नई रसोई
करीये राजभोग समर्पनो वा दिन श्रृंगार दोय
विरियां होई और अढाई प्रहर दिन चढ़े पाछें ग्र

न- ८२ हरा होइतो सवेरे राजभोग आरती करि अनोसरक

रि रारवीये अनहूरा तो घडी पेहेले जगाइ श्रृंगार वड़ो

करि वेठाईये पाछे उनह पाछे पाग तनीया पह

राय जाइ न के दिन हेइ तो गद्दल उदराइ उत्थापन

भोग आदि सब कीजिये श्रृंगार फेरिन कीजिये

फेरि श्रृंगार तब ही होइ जब राजभोग पेहेले अनहरा

होय जब राजभोग पाछे अनहरा होइ तो फेर श्रृंगा

र नांही और संध्या को स्वयं हरा होइ तो संध्या

भोग आरोगि संध्या आर्ती पाछे श्रृंगार वड़ो करि श

यन को वेठाईये पाछे अनहरा उनहरा पाछे सय

न भोग कीजे जो स्नान होइ तो शयन सरवडी स

यन भोग करनो स्नान न होइ तो सरवड़ी शयन

भोग करनो ॥ सीत काल मे अनहरा की विधि ॥ शी

तकाल मे उनह को एक ही स्नान करे मास को स्ना

न नहीं अनहरा ते पूर्व श्रृंगार वड़ो करि गद्दर उढा

ईये अंगीठी आगे धरि कीर्तन करनो गद्दर नयो

रहे सो छूवे नहीं पाग रंगीन रहे सो छुई जाय न

हीं एक तनीया श्वेत होइ सो पट वस्त्र सो वड़ो करि

चंद्र हरा रात्रि को कबहू होय जितनी रात्रि गई

होय प्रभुन को अनहरा ते पेहेले जगाईये उनह भरे

पाछे प्रहर वाढेट प्रहर रात्रि रहे उष्णकाल होइतो प्रभु
नको फेरि पोढाईये शीतकाल होइतो नहीं राजभोग
आरत्ती वेगि होत हीहे शीतकालमें चार छै घड़ी
रात्रि रहे तो उष्णकालमें हू न पोढाईये राजभोग
आरतीवेगिहै इति सर्व [illegible] को [illegible]
को विधि ॥ जो पहेले दिन [illegible] होई
होई सूर्योदयते पहेले प्रभुनको जगाइ वैठिये पा
छे उग्न हू भए पाछे प्रभुनको स्नान कराईये पाछे मंग
लभोग समर्पिये मंगलभोगको अवेर हेइ इतनो सो
कर्य आरसकछ नहीं सीतकालमे रात्रिको प्रभुनको
उठाई मंगलभोग मंगला आर्तीकरि पाछे सूर्योदय हो
इ तव स्नानोदय होई सीतकालमे असो कर्यनहीं
कदाचित उष्णकालमें हू विचारिये जो रात्रि सो उठा
इ मंगलभोग धरि पाछे स्नानोदय होइ सो नहीं उष्ण
कालमें रात्रिको उठावे नहीं [illegible] याभो
ग आरोगिवेको समय है रात्रि छोटी याते सीतका
लमें रात्रि वड़ी सो तैया भोग आरोगि वेके पाछे जो
रात्रिको मंगलभोग अरोगे याप्रकार सर्व कालको
लकी विधि संध्याभोगतई तो नम आगमें ही हेइ पा
छे रात्रिको शास्त्रार्थ उत्तहमांनि प्रभुनको स्नानक

न· ८२ रइ थोरोसो जलमंगाइ अनसखड़ी सयनभोगकर
नों सेनभोगमेसीरा रबा ऽ १ घृत ऽ १ खांडकी
गद्दी ऽ २ रपाकरगक आरोगे गटस्नान सूर्यग्र
हणहोई नवपूरीको चून ऽ २ न· घृत ऽ॥= सू
र्यग्रहणवाटकालतेइनवसेनभोगकीसखड़ी
केवदाते साक १ न सीरा न· पूरीइनकीयेतीन
वस्तु आरोगे सैयाभोगधरनो रात्रिको प्रसादलेनो
नही सबेरेहू प्रसादलीयेहोइ नही काहेतेजो चंद्र
ग्रहे तुयामात्रिन्सूर्ये यामचतुष्टयं इतिवाक्यात्
चंद्रग्रहणकेतीन प्रहर आगेछोड़ने सूर्यग्रहणके
चार प्रहर आगलेछोड़ने यातेचारि प्रहरदिन उपवा
स दूसरेदिन सुद्ध सूर्यदर्शन पाछे नवीनजल आ
वै सगरे स्नानकरे पाछेराजभोगहोई याप्रकार सू
र्यग्रहण ग्रस्तानको विधि॥ सूर्यग्रहणग्रस्तोद
य होइ नव पेहलोदिन रात्रिको प्रसादलेनो औरकछू
नही चंद्रग्रहण ग्रस्तोदयकी विधि॥ संध्याभोग
नाईलो आरोगेहोई पाछेसेनभोगकीजै उग्रहवेग
भयोहोइतो सखड़ीकीजे वोहेतरातेगईहोइतो अन
सखड़ीकीजे पेहलोदिनप्रहरभीतरप्रसादलीजे उ
परांतनही चंद्रग्रहण ग्रस्तानकी विधि॥ दुसरोदिन

मेराजभोगसरवड़ीनहोई शास्त्रार्थ उग्रहमांनि
भोरो सोजलमगाइ अनसरवड़ीभोगकीजै मंगल
भोगनेजैके संध्याभोगत्तांई राजभोगधारेबेके
समें अनसरवड़ी राजभोगमे धरीये सीराकोर
वा ४ घन १ २ गटीखांडुकी २४ प्रा
केन्न ५ ३ घन ५॥ स्याक ने दहीकेलवा २
ईतनो राजभोगमे आवे चंद्रग्रहण ग्रस्तानकी
विधि पाछेरात्रिको शुद्ध चंद्र देखीये नवसांन
करनो पाछेनयोजलमगाइदिनमेमृत्तिकाकेपात्र
लाइजलभरि पाछे सरवड़ी राजभोग तथासेंनभोग
संगभेलोधरनो पाछेप्रसादलेनोदिनमेप्रसादलेनो
नही यहप्रकारचंद्रग्रस्तास्तकोकरनो ग्रहणमे
अपरस सब काढनी धोती उपरना सूतकेनारहे
उग्रहभयेपाछे ग्रकटा पेहेरि मंदिरमेजांनो
खोपुरुषके सबल्लेनबस्त्रकाढने रसोईकी
सरवड़ीकाढनी कटेहुई सरवड़ी अनसरवड़ी की
जारनो पेहेलेदिनमृत्तिकाकेपात्रसब काढने
मंदिररसोईजलघरके सर्वत्र काढने इतिग्रह
णकीविधि
मंगलाभोगत्तेलेके संध्याभोगत्तांई बालभोगकीसामग्री
मगदके लडुवा आरोगे आरोगोपीवल्लभमे अनसरवड़ीमात्र
नित्यकी आरोगे सरवड़ीमेनही आरोगे गोपीवल्लभभोग
तथां राजभोग भेलोई अनसरवड़ी आरोगे यहरीतहै पं. ७

न. ६३ चंद्र पर्वजब ग्रस्नान होय जावरसमे तबमंगलाभोग
सोलेकेसंध्याभोगतांई अनसखड़ी श्रीठाकुरजीकोभोग
आवे औरसांझको चंद्रदर्सनभयेपाछे फेरीनयोजल
आवे तासोफेरखासाहोईनयेजलसुं तापाछे राज
भोगकीसिमग्रीसामग्री सबफेरकेरीतीसुं
सिद्धिकरनी औरगोपीवल्लभभोगकीजोसामग्री
नित्यसखड़ीआवतहोई सोऊसिद्धिकरिके और
सेनभोगमेजोसदैवआवतहोई सोइसिद्धिकरिके
ताप्रमाणसेनभोगकी सखड़ीसिद्धिकरिकेराज
भोगगोपीवल्लभभोग सेनभोगतीन्योभोगसें
नभोगकेसाथभेलेआवे नित्यनेगप्रमाण और
धूपदीपतुलसीसंखोदिकसबकरनो सेनभो
गमेयहरीतिहे जबचंद्रग्रहणग्रस्तास्त होई
तादिनाऐसेकरनो चंद्रग्रहणग्रस्तास्तहोई
तादिनाअधिककोमेसामग्रीआवेगो ताकीविधि
लिखीहे सोराजभोग ३ २ घृत ८.२ खांड ५४
यामेतेसेरकोसीरागोपीवल्लभमेआवे आध
कोमेऔरचूनकीपूरी सेर १ कोअधिकोमेआवे
गो सखड़ीभोगकेठिकानेजोअनसखड़ीनित्यआ
वतहोई सोसबआवेगो राजभोगसखड़ीकेठि

कोंने सीरा ऽ१॥ को न॰ पूरी ऽ२ कीरोटीकेठिकांनेसा

क ५ न॰ रायता १ इतनो सरवडीकेठिकांनेभोग

आरोगे बराके लीरे बेसन सेर ऽ२॥ घृत ऽ२॥

खांड ऽ५ सो सब भाग्यारतीताई सामगको बाल भो

ग आरोगे

८४

श्रीकृष्णायनमः॥ वैसाखसुद १३ केदिना श्रीबाज
कृष्णजी मुम्बईमे नरगेमंदिरमे पधारे ता दिन पाटउत्सव
अभ्यंग वस्त्र केशरी रुपेरी किनारीदार कुल्हे केस
री नई धरे आभरण कुल्हे पर सब उत्सवके गादीपे
हारमाला ने कंठला चंद्रहार सब उत्सवको श्रृंगार
भारी होई कुल्हे पर जोड़ सादा पांच चंद्रकाको धरें
और सवेरसुं सांझ पर्यंत नगार खाना बेठे
अथ भोगकी विगत सवेरे मंगलासुं लेके सेनके
वेरा तांई सेवके लडुवाको बड़ो बालभोग और गोपी
वल्लभमे आरवो पाटीया और राजभोगमें अनस
खड़ीमे मीठो श्रपाक बड़ाकी छाछ की हांडी ने सिख
रन बड़ा ने सेवकी खीर केसरी आधिकीमे नित्य
जितनो होइ और गोपालवल्लभमे सेवके लडुवा
और दूधघरमे दूधकी हांडी केसरी ने वासोंदी सु
पेन [illegible] ने पेड़ा केसरी और [illegible] धोवा
दार तीनकुंदा ने पापड़ वड़ी ने तिलवड़ी देव
री ने मेवाभात ने सिखरणभात ने आधि
कीमे घोस्यो सतुवा इतनो सखड़ीमे राजभोग
आइ चुके समय भरे भोग सराय आचमन मु
खवस्त्र करि बीड़ा आरोगाय प्रभुनको सिंघासन

ऊपरपधराय माला फूलकी पहराय दर्सनखोला
य तापाछे झारीभरिके सिंघासनपेधरिकेफेरचं
नकोदीवड़ा मोतीकी आरतीमेधरिके प्रगटके
पाछे प्रभुनकू तिलककरनो बीड़ा आधिकीके १६
नामे बीड़ा बड़ेनबाछोटे ताकेधरे जेकीविगत
२ बड़े बीड़ा तिलकके न-२ बंटामे न-४ सैय्या
कीतबकड़ीमे धारीतिबड़े बीड़ा अबछोटे बीड़ा
नकीविगत ४ तिलकके २ सैयाकी तबकड़ीमे
२ बंटामे पानबीड़ाधारि तिलककर आरतीउता
र हाथधोय आरसीदिखाई मालावड़ीकरिटे
रादे अनोसरकरिबाहिरनिकसीये सांझकूफू
लकीमंडलीइछ्यासोहोई औरसबेरे राजभोग
समे अंगमके पनौवाकीमंदिरके द्वारबंदनमाजब
धे

श्रीबालकृष्णजीकोनित्यनेग ताकीविगतहोजिरवी
गोपीवल्लभ सखड़ी चोरवासेर ऽ२ दाल ऽ१
घृत ऽ। कठीनथापकोड़ीकीताकोबेसन ऽ। शाक
न-कचरीया मिलिकेजबरीया ६ आवै राजभोगमे
थारकेथारया खरवासेर ऽ४ [illegible] ऽ२ [illegible] ऽ१क
टीकोबेसन राजभोग गोपीवल्लभ [illegible] मिलिके
ऽ१ शाकन-भुजेनाकोमिलिकेबेसन ऽ।। शाकन-
भुजेनामिलिके गिनतीकेनग १० होय रोटीकोचून
ऽ६ जीटीकोचून ऽ।। मिसीरोटीकोचून ऽ।। चोरी
ड़ापतोघनकोसेर ऽ१ राजभोगनाथारनो घृतसे
र ऽ।। रोटीचुपड़वेकोघृत ऽ।।। मीसीसधांलीटी
कोघी ऽ।। मोमनसब्हांमीठोतेल ऽ।। शाकन-भु
जेना भजवेकोनघांवघारिबेकोमिलिके हींग तो
ला २।। सेंनतांईकीमेथी तो-४ जीरेतो-४ रा
ई तो-२ कालीमिर्च तो-२ हलदर ऽ= लोंन
से-ऽ१ खटाई ऽ=
श्रीबालकृष्णजीकोनित्यनेग अनसखड़ीको ता
कीविगत तोलभंडारकी पाकी बाराठौरकोनि
त्यकोमेदा ऽ३ घृत ऽ३ खांड़ ऽ३ नांमेसेर १के
नग १० करनेवड़े न-सेरएकके नग २० तयांसे

न- २१केनग ३२ येवासटनगानित्य आरोगे मेदा
८६ कीपुरीजीराकी नाकोमेदा ऽ१ नाकेनग २६बड़े
नघांछोटे नग ८ नयांरवर रवरीकेनग ४
नामे २ वडेनथा २ छोटे औरलुचईकोमेदा ऽ।=
नाकेनग २६ न-छोटेनग ४ वेसन ऽ।। घपडी
कोनग २४ न-छोटेनग ४ वेसन भुजनाको ऽ=
चंन ऽ१ नांमे ऽ।। कीरवासापुरी न-सेर ऽ।। सादा
को जुमलेवारासुद्धां घृत ऽ४। याप्रमारावाल
भोगकोनेगनित्यहै

अथ सरवड़ीको नेगनित्यको सेंननांईस्वरू
प ३को नाकीविगतहै

श्रीबालकृष्णजीको नित्यनेगसरवड़ीको नाकेगो
पीवल्लभके चोरवासेर ऽ २ खर ऽ१ कढीको
वेसन ऽ। घृत ऽ। घारको याप्रमारा

गोपीवल्लभमेकूटेरो ८ आवेराजभोगमेकीवी
चोरवा ऽ४ खर ऽ२ मेन ऽ१ वेसरा ऽ।। क
ढीको औरलीटीको रवासेर ऽ।। नग ४ रोटी
कोचून ऽ६ नग ८६ न-चंन ऽ। मीसीको नाकेन
ग ८ साक ८ आवे न-भुजेरा १ भोगको घृत
ऽ।। रोटीउपरिवेको घृत ऽ न-लीटीको ऽ। चु

पड़बेसद्धांको सेनकोभोगताकीविगत

चोरवा ऽ२ दार ऽ१ तथांकटीसवेरेकी ऽपावे शा
क १ ऽपावे घृत ऽ। जुमलेजोड़ श्रीबालकृष्ण
जीकेनेगकी गोपीवल्लभलां सेनतांईकोनेगके
चोरवा ऽ८ दाल ऽ४ घृत ऽ२ मूंग ऽ१ बेसन
ऽ।।। चून ऽ४।।। तीली रंगोमीसी रवहा के
चोरीठा पजोश्चनको ऽ१।। तेलमीठो ऽ।।= बे
सनसाकको ऽ।।। मिर्चपिसी तो॰८ हींगतो॰ ३

मोटाश्रीमदनमोहनजीतथांश्रीनवनीतप्रीया
जी तथाछोटेमदनमोहनजीकोनेग राजभोग
स्त्र सेनभोगतांईकोनेग ताकीविगत राजभोग
मे चोरवा ऽ८ दार ऽ२ मूंग ऽ।। कटीकोबेस
न ऽ।। भुजेनासद्धां चूंनरोटीकोत-मीसीको ऽ२।
रबालीलीको ऽ।। घृत ऽ।। चुपरवेकोसोवीटी
सद्धांकोभोगकोघृत ऽ। सेनकेचोरवा ऽ२ दार ऽ१
घृत ऽ= घारको त-सेनके चोरवा ऽ२ दार ऽ१
बेसन त-कटोरी २कोघृत ऽ= जुमलेजोड़ ऽपा
रखेदिनकी सरवड़ीकीतीनोस्वरूपकीसेनतांईकी
चोरवा ऽ२२ दाल ऽ६ बेसन ऽ२ चून ऽ८।। रबो

न॰
८७

सेर ऽ१ चोरीठा ऽ१॥ घृत ऽ२॥।= तेलमीठो ऽ॥। मूंग
ऽ१॥ कालीमिरचपिसी तो॰ ८ हींग तो॰ ३

अबदूधघरकी सांमग्रीको नित्यनेग ताकी विगत
तोल मुम्बईकोदूधको मंगलासों सेंनलांईको सबलि
ग्वारे मंगलाकेडबरा १ ते॰ डबरीत्याहेमिलाके दूध ऽ५
गोवालकोदूध ऽ५ डबरान॰ नवकडीकोमिलिके
राजभोगमे खीरिको दूध ऽ४
राजभोगकेडबराको दूध ऽ१
संझाकोग्वालको डबराकोदूध ते॰ नवकडीकोमिलिके ऽ४
सेंनभोगकेडबरा २ कोदूध ऽ४
खोवातथांपेड़ामिलिके दूध ऽ२
जमायबेकोदूध ऽ२ यामेंसब आइगयो
मोरबनकोदूध मलाई साधबेको ऽ२
सिखरनको दूध ऽ१
महानथांराइताको दूध ऽ२ जुमलेदूध २५

न. जन्मदिवसकीयादी महीना अमावसना

६२ चैत्र सुद ९ श्रीगिरधरजीकाकाको जन्मदि.

वैसाख सुद ३ श्रीविठ्ठलेशजी लालजीको ज.

वैशाख शुक्ल ४ श्रीगोवर्द्धनजीमहाराजको उत्सव

जेष्ठ कृष्ण ८ लालजीश्रीरघुनाथलालजीको ज.

अषाढ शुक्ल १२ लालजीश्रीविठ्ठलरायजीको ज.

असाढ कृष्ण २ श्रीविठ्ठलरायजी लालजी उ.

अषाढ कृष्ण ४ श्रीदामोदरजी लालजी उ.

श्रावण शुक्ल २ लालजीश्रीवल्लभजीको जन्म.

श्रावण शुक्ल ८ श्रीबालकृष्णजी लालजी उ.

श्रावण शुक्ल १४ रायजी उ.

श्रावण शुक्ल १५ श्रीदामोदरजीको उ.

श्रावण कृष्ण ५ लालजीश्रीबालकृष्णजी ज. तथा लाल
जीश्रीमुरलीधरजीको जन्म

श्रावण कृष्ण १४ श्रीवल्लभजीलालजीको उत्सव

भादरवा सुद १३ श्रीगिरधरजीको उ.

भादरवा सुद १४ श्रीमथुरानाथजीकाकाजीको उ.

भादरवा कृष्ण ४ श्रीगोकुलउत्सवजीको उ.

भादरवा कृष्ण १२ बडेश्रीगोपीनाथजीको उ.

भादरवा कृष्ण १२ श्रीविठ्ठलेशजीलालजीको प्रादु श्री

श्रीबालकृष्णजी महाराजको उत्सव

आस्विन सुद १० वड़े श्रीमुरलीधरजीको उत्सव

आस्विन सुद १३ श्रीव्रजरमणजी काकाजीको उ.

आस्विन कृष्ण ४ श्रीगोकुलनाथजी लालजीको उ.

कार्त्तिक शुक्ला ६ [illegible]

कार्त्तिक सुद ७ श्री[illegible] महाराजको १

कार्त्तिक सुद १२ वड़े श्रीगिरधरजीको उत्सव वड़े

श्रीरघुनाथजीको जं उ.

कार्त्तिक कृष्ण ४ श्रीविट्ठलरायजी काकाजीको उ

उत्सव झारती मोतीको

कार्त्तिक कृष्ण ८ वड़े श्रीगोविंदजीको उत्सव

कार्त्तिक कृष्ण १३ वड़े श्रीघनश्यामजीको उ.

मार्गशिर शुक्ला ५ श्रीजीवनजी महाराजको जन्म

मार्गशिर शुक्ला ७ वड़े श्रीगोकुलनाथजीको उ.

मार्गशिर शुक्ल १५ श्रीद्वारिकेशजी लालजीको उ.

झारती मोतीको

मार्गशिर कृष्ण १३ श्रीगोकुलनाथजी घोटावारेको उ.

पोषसुद १ श्रीव्रजजीवनजी दादाभाईको उ. झा

रती मोतीकी

पोषकृष्ण १२ श्रीगिरधरजी लालजीको उ.

नं- ८६ फाल्गुन कृस्ना १ श्रीमथुरानाथजी लालजीको उ-
च्छारती मोतीकी

~~फाल्गुन कृस्ना १२ श्रीगिरिधारीजी लालजीको~~ उ-
~~च्छारती मोतीकी~~

श्राद्धनादिवसनीयाद

श्रावणकृष्ण ५ श्राद्ध श्रीभाभीजीमहाराजनो ब्रह्मभोज

भाद्रपदकृष्ण १ श्रीदादाजीमहाराजनूश्राद्ध संवानी १

भाद्रपदकृष्ण ४ श्रीगोवर्द्धनजीमहा॰ न्श्राद्ध रवानी ६

भाद्रपद कृष्ण ८ श्रीबालकृष्णजी न॰ श्रीगिरिधारीजी श्रा-

भाद्रपद कृष्ण ८ श्रीभाभीजी महा॰ श्राद्ध रवानी १

भाद्रपदकृष्ण १२ श्रीविठ्ठलेशजी नानजी श्राद्ध

भाद्र॰ कृष्ण १४ श्रीगोकुलनाथजी श्राद्ध

आस्विनशुक्ल १४ श्रीगोकुलनाथजीनूश्राद्ध ब्रह्मभोज

मार्गसिरशुक्ल १२ श्रीविठ्ठलेशजीनूश्राद्ध ब्रह्मभोज

माघकृष्ण १ श्रीदादाजीमहाराजको श्राद्ध ब्रह्मभोज

फागणकृष्ण ५ श्रीगोवर्द्धनजीमहाराज श्राद्ध ब्रह्मभोज

श्रीफलने दूधपावे मगसिरवद १३ श्रीजीवनजीमहाराजकोश्राद्ध संव

त्सर श्राद्ध

माहवदी १३ श्रीजीवनजीमहाराजके बड़े बहूजीको ब्रह्मभोज

संवत्सर श्राद्ध

माघबदी ५ को रवानी १ करनी

न- श्रीनाथजीके खेलसमे विशेष सेवा होइहै ताकीयादी
२०० गोपीवस्त्रभसरेपाछे सदांकीरीत्ति प्रमाण श्रीनाथजी
कीभावनां पधरावनी गुंजाधरावने फेरभोगधरनो
नित्यवत्त पलना झूले पर्यंत सबसेवाकरनी फेरप
लनाझूलेपाछे ठाकुरजीको भोगमंदिरमेनित्यवत्तपधरा
वने श्रीरंभघपधरायके श्रीनाथजीकीभावनाकेइहं
सदांवत्तपधरावने श्रीरश्रीनाथजीरखदुसहित भावनां
केभीतरबीचमेपधरावने फेरफूलकीमाला २ धरावनी
दंडोत्तकरनी फेर आरती धरावनी चंदनके दीवलाकीम्यां
दीकीमोतीकीथारीमे तथांशंखनाद झालरघंटावजे दं
डोत्तकरिके भावनाको श्रीमुखहे तहांमखाईपेतिलक
करे अक्षत्तलगावेबीड़ा २ कंकुजगाइकेधरे फेरीखि
लावे अपनेघरकीरीत्तिसूं फेर आरसीदिखावनी
फेरे आरती थारीमे थोरेसोकंकुधरिके मठीयावारिके
आरतीकरनी रघुलोनन्योछावरकरिके दंडवतकरनी
हाथधोवने फेर [illegible] मीयावंद दंडोत्तकरीखि
लावे तथांचरणस्पर्शकरे फेरिदंडोत्तकरे फेरिबहू
बेटीसबक्रमसों श्रीनाथजीको खिलावे तथांचरणस्प
र्शकरे फेरबहूबेटीसरखे फेर आइके सबटिकानेकेथार
क्रमसोसानने तुलसीसंखोदिक समर्पके धूपदीपकरने

राजभोग आवते तिलक तथा रवेल फकत श्रीनाथ

जीको होई ठाकुरजीको नहीं होई ठाकुरजीको तो

राजभोग सरे पाछे नित्य वन रवेल होई तिलक न

ही और मंगला भरे पाछे श्रीनाथजीके दूधस्नान

करावनो और कोन हीं ताको दूध सेर ऽ५ और स्ना

नसमे तिलक होई बीड़ा २ कुमकुम लगाइके सा

नके थार मे धरने

श्रीनाथजी पधारे तय सं. गो. श्रीजीवनजी काकाजीने

फाल्गुन वदी ७ श्रीनाथजीके पाट उत्सवको दिन सदा

सरवड़ी अन सरवड़ी व दूधघर मे सामिग्री वढती आ

रोगाय वेको नेग बांध्यो ताकी याद आपकी आज्ञा

प्रमाण गालिरवाई मिती फाल्गुन वदी ५ गुरुवार सं

वत् १८२४ के

सरवड़ीकी सामग्रीकी याद

१ सेवको एक दोरा सदा को आवे है राजभोग मे तामे के

सर पधरावनो और कछु वदनो नहीं

मेवा भात राजभोग मे आरोगे ताको प्रमाण गे रपके

भंडार केसुं चोरवा ऽ॥ व्रा ऽ३ मेवा सब मिलिके

ऽ। केसर सुगंधी

खटो भात ताके चोरवा सेर ऽ॥। नीवू नग १५ वडे म

न. साला फीकीसांमग्री थारसदां उत्सबमे आँवैहोयहै
२०१ ताप्रमारणकरनी

अनसखड़ी सांमग्रीकीयाद

मंगलामेमनोर केशरीको ताकोम्मेदा ऽ३ चोरीठा
ऽ॥। घृत ऽ३॥। खांडस्येर १२ केसरतो० २ सुगंधी
इलाइची बरासको

राजभोगमे सूरजमंडाकीसांमग्रीआरोगे ताकी
याद वेसन ऽ।। घी ऽ१।। मेवाकुतलो ऽ। खांड ऽ२
भीतरमिलाइवेकी खांड ऽ१।। पागिवेकी केसर
तो० १ सुगंधइलाइचीबरासकी

दूधघरकीसांमग्रीकीयाद

बरफीकेसरी ताकोदूध ऽ५ खांड ऽ१।
पेड़ा केसरी ताकोदूध ऽ५ खांड ऽ१
दूधपुरीकेशरी ताकोदूध ऽ५ खांड ऽ१।
गुझीयाकेसरी दूध ऽ५ खांड ऽ१।
बासोंदी केशरी दूध ऽ५ खांड ऽ१।
केसर सबकी तोला २ सुगंधीबरास इलाचीबस्त्रप्रमाणे

भंडारीने आपवानो कुलतारीजो

रसोईनी सांमग्रीनो तारीजो चोखा ऽ१। बूरा ऽ३
मेवो ऽ। नीबूनग २५

ऽपूनसरबडीनीसांमग्नीनोतारीजो घी ऽ ५। खांड ऽ४॥ मेदा ऽ ३ वेसन ऽ॥ चोरीठो ऽ॥। केसर नो २ मेवा ऽ।

दूधघरनीसांमग्री

दूध सेर ॥ऽ४ खांड ऽ६। केसर नो २

येऊपरालिखीसांमग्रीनोकुलरावदरतारीजो

मेदा ऽ ३ घी ऽ ५। खांड ॥ऽ॥। दूध ॥ऽ५ बूरो ऽ ३ वेसन ऽ॥ चोरीठो ऽ॥। मेवा ऽ॥ नीबनग २५ केसर नो ४ चोखा ऽ १।

नं. १०२ गोस्वामी श्रीगुसांईजीना बालक परदेशी पधारे तेनी साथे सेवा श्रृंगारनो व्यवहारनी रीत

श्रीनवनीतप्रीयाजीना घरना बालक सर्वे साथे सर्वे सेवानो व्यवहार छे

श्री नगर वालाजीनासाथे सर्वे सेवानो व्यवहार छे

श्रीराजनगरवालानीसाथे चरणस्पर्शनो व्यवहार छे

श्रीमांडवी तथां चापासेनी वालासाथे सर्वे व्यवहार छे

श्रीकोटा वाला श्रीमाधोरायजी महाराजनी साथे सर्वे व्यवहार छे

श्रीमथुरेशजीना टीकेत साथे सर्वे सेवानो व्यवहार छे श्रृंगार मांगे तो आपवो

श्रीभामिनीवहूजीना घरमा जे गादी बेसे तेनी साथे सर्वे व्यवहार छे बाकी श्रीमथुरेशजीना घरना सर्वे साथे चरणस्पर्शनो व्यवहार छे

श्रीविठ्ठलेशरायवालानेसाथे भोगधरवानो तथा झारीभरवानो व्यवहार छे

श्रीद्वारकानांथजीवालानी साथे सर्वे व्यवहार छे

श्रीगोकुलनांथजीना वहूबेटी साथे हिंडोरा झुलाववानो व्यवहार छे

श्रीचंद्रमाजीना घर साथे पवित्रा तथां पालनांन-

हिंडोरा तथां पीताम्बर ओढावो

श्रीकाशी न- श्रीमथुराजी तथां सेरगटवारा साथे

सर्वे व्यवहार छे

श्रीसुरतवाला साथे सर्वे व्यवहार छे

श्रीमदनमोहनजी वाला साथे वरतायसर्वेनो व्यवहार छे

श्री

न. २०३ सेन आरती श्रृंगार सुद्धां होई ताकी याद

श्रीजन्माष्टमी

शरद

रूपचौदस

दिवारी

प्रबोधनी

आवरगामे रोशनाई काचको हिंडोरा होई तादिन
आवरगामे ठकुरानीतीजकुं तथा राखीकुं सेनसमोनि
यमपूर्वक हिंडोरा झूले श्रृंगार सब वडो हेरके सूक्ष्म होई
वंदनवार तथा थारीकी आरती राजभो
गकी जा उत्सवको छडीयजदाज होई ताउत्सवको
अवस्य और जा उत्सवको आरबो पाटीया होई तादि
न दोसमें थारीकी आरती होई राजभोग त-संध्या
प्रबोधनीको सेन आरती भरे पाछे पेडेंगविछे सोमं
गलभोगकी त्यारी होई तब उठे तथा जन्माष्टमीको
इ सेन आरती पाछे [illegible] जन्मकी त्यारी होई
तब उठे

पेडेकी स्वेन खोली त-मृदाकी स्वेन खोली वसंतपंचमी
सोच्यदे सो डोलके दिन तांई रहे ऐसेई आक्षयतृती
यासो च्यदे सो हिंडोरा विराजे ताके पहले दिन तांई रहे

वैसाखसुदी १३ श्रीबालकृष्णजीको इहांकेमंदिर
कोपाटउत्सव वादिना दुग्धस्नानहोई मंगलाश्रृंगार
नीहोइचुके टेराआवे तापाछेस्नानकेटिकामेंमंदि
रवस्त्रकरि सुकीहलदीको॰ अष्टदलकरि ऊपर
स्नानकोसोनेकोथारधरीये स्नानकेसोनेकेपात्रमे
कुंमकुंम घोरिकेधापे॰ अष्टदलकरि पीताम्बरबिछाइ
केश्रीकृष्णधराईये पाछेप्रभुनकोतिलककरि॰अ
क्षतलगाइ दोउबीड़ानको कुंमकुंमलगाइकेधरीये
पाछेपंचाक्षरपढिकेचरणारविंदमेतुलसीसमर्पिये
पाछेशंखमेदूधजेस्नानकराईये दूधसोस्नानहो
इचुके पाछेकेसरीजलतेशंखभरिचारिवेरस्ना
नकराईये पाछेश्रृंगवस्त्रहोई अभ्यंगहोई उबट
नाहोई आदित्यवार मंगलवारहोइ तोहुआबराहोई
कमलपत्रहोई राजभोगसमेतिलकहोई औरदुग्ध
सोस्नानतश्रांतिलककोक्रम येहीश्रीनाथजीकेपा
टउत्सवकेदिनाहोई

न. २०४

॥ श्रीहरे: ॥

आमारा आशीर्वाद वांचजो बीज पाट उत्सवने ल्हसिं
ह जयंतीनो रवाछे नेपाट उत्सवस्वारु सोनानोसाज
वास्तरगास्तुद्धांस्तुलेजो जडावनोसाज गादी आभरण
पिरोने कार्यलेजो आ गादीनीनवी हीरानी आवसने
उत्सवनाआभरणमाथी मोहोटो हीरानो १ हारले
जोमीनानो आपरवोरो पीटो परगालेजो अधिकीना
चांदीनावास्तराचमचावगेरे: सर्वेलेजो सिज्यापलनां
नित्यनाश्रीमहाप्रभुजीनीपलगडी सोनानो अधिकवा
स्तरदनाकस्तरणा सोनानासवारे श्रीने दूधस्मानथसे
तेटंगोफकत तिलकअक्षतजोसेने तुलसीजोसे स्मान
न्रदूध ऽ ५ जोसेनेनी लजबीज राखजो आमे आ
वसं बीडानग १० मोटातिलकना तयाबीड़ा ४
न्हाना तेमाथीबीड़ा ४ मोटातिलकना तथांबीड़ा
४ न्हानातिलकना बीडानीविगत बीड़ानग २
दूधस्मान थायतेरवतें बीड़ा २ राजभोगसमय
तिलकथायतेवरवते मोटाबीड़ा ४ न्हानातिलकमां
बीड़ा २ बेटामे तथांबीड़ा ४ तवकडीमेंफ्रनोसरमां

संवत् १८३५ का प्रथम आसोज वदी ६ के दिन महाराजनको मनोरथ भयो ताकी सांमग्रीकी विधिः

वालभोगकी सांमग्रीकी विगत

छाछके बड़ा चारि भंगीके वड़ाकी छाछ मगोदाकी छाछ पकोड़ीकी छाछ वड़ीकी छाछ

सिखरन वड़ी दोहनरहकी केसरी न० सुपेन

दूधघरकी सांमग्रीकी विगत पेड़ाकेसरी वरफी केसरी गंद्राकेसरी सादा न० पागेल: खोवाकेसरी न० सुपेन खोवा रवड़ी खोवाके लाडूकेसरी दूधपूरीकेसरी मलाईकेसरी

सुपेन सांमग्रीकी विगत मेवाटीकेसरी न० सादा पागेल पेड़ा वरफी गंद्रा सादा न० पागेल मेवाटी सादा न० पागेल खोवाके लाडू सुपेन दूधपूरी न० मलाई सादा मोरवनकेसरी न० सुपेन दूधकेसरीकी विगत दूधकेसरी मंगलाजेसो दूधकेसरी सेंनजेसो वासोदीकेसरी सेवकेसरी खोवा सादा घटो खोवा सादा रवड़ी

दूधसुपेनकी विगत दूधमंगलाजेसो दूधसेंनजेसो वासोदी सेव सुपेन दहीकी विगत वधोदही मीठो केसरी दहीं वधो सुपेन सिखर

न. १०५ गाकेशरी सिखरगा सुपेन दहीविनावध्योकेश

री दहीविनावध्योसुपेन दहीवध्योछोकेल

छाछकीविगन छाछकेशरी मीठी छाछसुपेन

मीठी छाछ छोकेली छाछसुपेन मठोछोकेल

श्रीमद्गोस्वामीश्रीगोकुलकृष्णजीमहाराजश्री

जीवनलालजी काकाजीकी आज्ञासे लिष्यो है

श्रीबालकृष्णजीको सुपेद वस्त्र को वंटा ताके वस्त्रन केन
गताकीविधि सिंघासनके तकीयाकी खोली ३ गादीको
वस्त्र १ खंडकोगादीकीखोल २ पाटकीखोली १ सि
ज्याकेबीचकीचोकीकीखोली १ मूढाकीचोकी २ भोगमंदि
रकेपाटकीखोली १ [illegible] कीखोली १
ताकीखोली सालिगरामजीकीखोलीचोकीको १ मुखवस्त्र
१ अंगवस्त्र १ भोगमंदिरके पाटकीखोली १ नवकड़ीकीबि
रियाकोवस्त्रगादी ऊपरको १ स्नानकोपीढाकोचकला १
झारीवंटाके नीचेकेचकला ४ सांगामांचीकोवस्त्र १
मूढाकीखोली २ सिज्याकीबिछाइवेकीदुहरीचादर
१ सिज्याकीबिछाइवेकीचादर १ सिज्याकीउढाइवेकी
चादर १ बालस्त दुहरे २ गिरदा २ खोली २ छोटेत
कियाकीखोली १ पेड़ाकीखोली २ पलनांकीसुपेदी
दुहरी बिछाइवेकी पलनाकीचादर बिछाइवेकी १ पल
नाकीचादर बिछाइवेकी १ पलनाकीचादर १ उढाइवे
की पलनाके तकीया २ [illegible] पलनाकेतकिया २ छोटे
जलपांनकीमथनीकोछन्ना १ हाथपोछिवेको अं
गोछा १ मंदिरवस्त्र १ याभांतिसुपेदवस्त्र श्रीबाल
कृष्णजीके वंटाकेनग ४४ श्रीमहाप्रभुजीकीचादर दु
हरी १ श्रीमहाप्रभुजीकीचादर उढाइवेकी १ श्रीमहा

न- २०६ प्रभुजीकी बिछाइवेकी चादर १ श्रीमदनमोहनजी तथां श्री
नवनीतप्रियाजीके सुपेद साजकी विगत तामें प्रथम श्री
मदनमोहनजीके सिंघासनके तकियालंबे २ ताकी खोली
२ पीठकको तकिया ताकी खोली १ गादीको वस्त्र १ जरव
वस्त्र १ अंगवस्त्र १ खरककी गादीकी खोली २ चकला २
चोकीकी खोली १ भोगमंदिरकी गादीको त- तकीया
की खोली २ सिजके सागामांचीकी गादीको त- तकीया
की खोली २ घ्रांनको चकला श्रीनवनीतप्रियाजी तथां
श्रीछोटे मदनमोहनजीकी सुपेदीकी वीसिंघासनके तकी
यालंबे ताकी खोली २ गादी २ ताके वस्त्र २ तकीया २
पीठकके ताकी खोली १ चोकीकी खोली २ सिज्याकी
उहरी चादर १ बिछाइवेकी चादर १ उढाइवेकी चादर १
वालस्त २ ताकी खोली २ गिरदाकी खोली २ छोटेला
लाजीकी तकीयाकी खोली १ वस्त्र जुमले ८४ तामें श्री
बालकृष्णजीके वंटाके वस्त्र नग ४५ श्रीमदनमोहन
जीके वंटाके वस्त्र १६ श्रीनवनीतप्रियाजी तथा छोटे
श्रीमदनमोहनजीके वंटाके वस्त्र नग १७ सिज्यामे
नीवस्त्र ८ जुमले वस्त्र ८६

श्रीबालकृष्णजीकीवीड़ीमेकाथागोली ३ नांखनी
तथांबड़ेवीड़ानमेकाथागोली २ नांखनी ओरस्वरूप
नकीवीड़ीमेकाथागोली २ नांखनी ओरछोटेवीड़ान
मेकाथागोली १ नांखनी याभांतिबडेवीडा ३० ताको
गोली ६० बडेवीडा १ ताकीकाथागोली ४ तथाछोटे
वीड़ा २४ ताकीगोली २४ वीडी २ छोटी ताकीकाथा
गोली ६

काथागोलीकरनीताकीवांधिवेकीविगत

काथाकेवड़ीया छांगाकेपीसकेमेदाजेसोकरनोंता
तकाथाकाटिनोंरखनो फेरकाथा ॥३ पक्केतोलको
वामेचोवाअगरको तो॰ ३ कस्तूरीचोरवो तो॰ ३ त॰ अंब
रचोरवो तो॰ ३ ओरखेरसार पाव ॥ अंतरगुलाव
को त॰ फुलेलसोगोलीवांधनी काथाकूं त॰ खेरसारकूं
राकठेकरिकेकेवडाकेभीतरधरिराखनों इतनेसरद
होइजाइगो फेरवामेअंबर त॰ कस्तूरी पीसिकेगुला
बजलमेघोरिकेमिलावनो काथामेफेरअंतरमिलाव
नों तोला ३ फेरहाथमेचोरवो चमेलीको फुलेल ल
गावतोजांगो ओरकाथागोलीकररावेसोमिस्त्रकाजी
केप्रमाणे गोली ४०००० चालीस हजार

न· २०७ अब अरगजा ठाकुरके बरणीमे धरिवेको करनो ताको
केसर न· बरास न· कस्तूरीको भीतर घसारा न· चोवा
अरगजाको ये सब वस्तुको गुलाबके जलमें घिसनी
और अत्तर भीतर नांखनो गुलाबको अथवा मोती
याको अथवा रचसको तीनमेसो जो मनमें आवे सो
नरवनी इतने अरगजा होइ है

तिलक श्रीवालकृष्णजीको होइ तालीयादी

श्रीजन्माष्टमीके सवेरके पंचामृत समे तथा शृंगारभये

पाछे तथा आधीरातके पंचामृतसमे होय पंचामृतभ

येपाछे माला तिलककी ग्वालकोलेपाछेवड़ीहोय त-

थाआधीरातके पंचामृत भयेपाछे मालाशृंगारसमे मंगलभो

गआवे तब वड़ीहोय कमलपत्र होई

श्रीराधाष्टमीको कमलपत्र होई तिलकसमे मालाप

हरे सोउत्थापनसमे माला वड़ी करिके दर्सन खोलने

वावनद्वादसीको कमलपत्र तिलक नहीं

शरदको कमलपत्र होई

रूपचौदसको तिलक अभ्यंगसमे होई सबनकूं दिवारी

को कमलपत्र होई

भाईदूजको धारसाजके तिलक होई माला उत्थापन

समे वड़ी होई

प्रवोधनीको कमलपत्र होई मंडपसमे तिलक हो

ई मंडपकी आरती भयेपाछे माला वड़ी होई श्रीगि

रधरजीके उत्सवको तिलक सवनको होई तिल

कसमे शंखनादनहीं होई मालासवस्वरूपनकी ताव

ड़ी होइ नित्यक्रम श्रीमहाप्रभुजीकी उत्थापनसमे

वड़ी होई श्रीगुसांईजीन - श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवको येही क्रम

नं॰ २०८

श्रीरामनोमी श्रीठाकुरजीकोतिलकहोई कमलपत्र
होई मालानित्य क्रमवड़ी होई
नृसिंहचतुर्दशीको तिलक नहीहोई

वडेश्रीमदनमोहनजीको अभ्यंग होइ ताकीयादी

जन्माष्टमीको पंचामृतस्नान

राधाष्टमीको अभ्यंग

रूपचौदसको अभ्यंग

दिवारीको अभ्यंग

प्रबोधनीको अभ्यंग नहीं करावनो

श्रीगुसांईजीके उत्सवको अभ्यंग

होरीको अभ्यंग

दुतीयापाटको अभ्यंग

रामनोमीको अभ्यंग नहीं करावनो

श्रीमहाप्रभुजीके उत्सवको अभ्यंग

नृसिंहचतुर्दशीको अभ्यंग नहीं करावनो

स्नानयात्राको जेष्टाभिषेक करावनो

रामनोमीको अभ्यंग नहीं

ग्रहण जब होई तब मोक्ष भये पाछे स्नान करावनो

न- २०९ संवत् १९२६ के आस्वन शुक्ल ३ गुरुवार के दिन श्री
जीवनजी महाराज व्रजयात्रा करिके घर पधारे ताको कु
नवाड़ो श्रीकूं आरोगायो मलडा ६४ के चोगुनों ता
कीविगत खीरि के मलडा ८ दहीभात के मलडा ८

सीरा के मलडा १६ पकवान के मलडा ३२ यारीति

सो चोगुने कुनवाड़े कों मिलिके मलडा ६४ भए ताके

सामान की बिगत खीरि को दूध सेर २० तथा सब सेर
२१ बूरा सेर ३५ पांच भंडार के दहीभात के दही को दू
ध सेर ५२ जमायो चोखा ३३ भंडार के सीरा को र
वा सेर ३४ घृत सेर ३४ तथा खांड़ सेर ३० वीस तो
तसब भंडार को पकवान मे सेव के लडुवा तथा ठोर
ताको मेदा सेर ५२ बारह घृत ५२ तथा खांड ५२
बारह दूनी सेव के लडुवा की ठोर की खांड ३९ सेर नव
सब मिलिके २१ तोल भंडार को लिख्यो गोस्वामि
गोकुलेश नें सुखियाजी परमानंद के कहे सं

श्रीआचार्यजीकोउत्सव वैसाखवदी ११

श्रीगुसांईजीकोउत्सव पोषवदी ८

श्रीगोपीनाथजीकोउत्सव आस्वनवदी १२

श्रीगिरधरजीको कार्त्तिकसुद १२

श्रीगोविंदरायजीको मार्गसिरवदी ८

श्रीबालकृष्णजीको आस्वनवदी १३

श्रीगोकुलनाथजी मार्गशिरसुदी ७

श्रीरघुनाथजीको कार्त्तिकसुदी १२

श्रीयदुनाथजीको चैत्रसुद ६

श्रीघनश्यामजीको मार्गसिर वदी १३

घनश्याम

न. अभ्यंग

१२० जन्माष्टमी उबटनां

राधाष्टमी उबटना

वामन द्वादसी

पेहेलोपर्व

दसहरा

शरद पून्यो उबटना

रूपचोदस उबटना

दिवारी उबटना

भाईदूज उबटना

प्रबोधनी उबटना बीचमे ३ होय

श्रीगुसांईजीकोउत्सव

भोगी

वसंत पंचमी उबटना

होरीडांडो

श्रीजीनापाट उत्सव उबटना

होली उबटनां

डोल उबटना

द्वतीयापाट उबटनां

संवत्सर

रामनोमी

श्रीआचार्यजीको उत्सव उबटनो

अक्षयत्रतीया

श्रीबालकृष्णजीको पाटोत्सव उबटनो

नृसिंह जयंती

रथयात्रा उबटनो

पेहेलो हिंडोरा

ठकुरानीतीज ॰

पवित्राएकादशी

राखीपून्यों

पांना १ जन्माष्टमी निर्णय

पांना १ भादोवदी ५ व ६ व ७

पांना २ जन्माष्टमी भा-व-८

पांना १२ भादोवदी १४ श्रीविट्ठलनाथजीको उ.

पांना १३ भादोसुदी ८ राधाष्टमी

पांना १६ भादोसुदी ९

पांना १६ दान एकादशी वामनद्वादसी

पांना १८ आस्वनवदी श्रीदादाजीम-उ.

पांना १८ आस्वनसुदी १

पांना २० दसहरा आस्वनसुदी १०

पांना २१ सरद पून्यो

पांना २३ नातजी श्रीगोकुलनाथजीको उ.

पांना २४ धन तेरस

पांना २४ रूप चौदस

पांना २५ दिवारी

पांना २६ अन्नकूटकीविधि

पांना ३३ भाई दूज

पांना ३५ गोपाष्टमी

पांना ३५ अक्षयनोमी

सू- पांना ३४ प्रवोधनी का.सु.११
१ पांना ३७ वडेश्रीगिरधरजीको उत्सव
पांना ३८ गोपमास धनुर्मासचालु
पांना ४१ वडेश्रीगोकुलनाथजीको उत्सव
पांना ४२ श्रीगुसांईजीको उत्सव पोषवदी ९
पांना ४४ श्रीगोविंदरायजीको उत्सव
पांना ४४ श्रीगोकुलनाथजीको जन्मदिन
पांना ४५ मकर संक्रान्ति
पांना ४७ वसन्त पंचमी
पांना ५० होरीडांडो
पांना ५० श्रीनाथजीको पाटोत्सव
पांना ५२ वगीचाको उत्सव
पांना ५३ फाल्गुनसुदी १५ होरी
पांना ५४ चैत्रवदी १ डोलोत्सव
पांना ५७ दुतीया पाट
पांना ५७ श्रीरघुनाथजीको उ-
पांना ५७ भाईश्रीगिरिधारिजीको उ-
पांना ५७ संवत्सर
पांना ५८ रामनवमी
पांना ६० श्रीआचार्यजीको उत्सव

पांना ६२ अक्षय त्रतीया
पांना ६४ श्रीगोवर्द्धनजीकोजन्मदिन
पांना ६४ श्रीबालकृष्णलालजीकोपाटोत्सव
पांना ६४ नृसिंह चतुर्दशी
पांना ६५ श्रीगोकुलनाथजीगादीविराजे
पांना ६५ श्रीगंगाजीकोउत्सव
पांना ६६ स्नानयात्रा
पांना ७१ षष्टपिंडरु
पांना ७२ शयनी एकादशी
पांना ७२ श्रीविठ्ठलरायजीकोजन्म दिवस
पांना ७३ रजोक्षत्रारागीकेघरतेपधारेसोपाट उ-
पांना ७३ ठकुरानी तीज
पांना ७४ श्रीदामोदरजीको उत्सव
पांना ७४ भाईश्रीबालकृष्णजीको उत्सव
पांना ७५ पवित्रा एकादशी
पांना ७७ राखीपून्यो
पांना ७९ नित्यसेवा
पांना ९० ग्रहणकीविधि
पांना ९५ नित्यनेग
पांना ९८ जन्मदिवसकीयादी